हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2018-2020
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में
कृषि एवं बागबानी-5, धर्म-संस्कृति -6-7, कहानी-8, महिला/बाल/स्वास्थ्य-9, पहाड़ी-10

वर्ष 43 अंक 31 शिमला, 5 मई, 2021 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये website:himachalpr.gov.in/giriraj.asp

सामुदायिक भोज पर रहेगा पूर्ण प्रतिबंध

प्रदेश में अभी तक 16.65 लाख लोगों को मिल चुकी कोरोना खुराक

केंद्र से अतिरिक्त ऑक्सीजन सिलेंडर की आपूर्ति का आग्रह

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर शिमला में कोविड-19 के प्रबंधों को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए

प्रदेश सरकार ने राज्य में कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप के दृष्टिगत वैवाहिक और अन्य सभी प्रकार के आयोजनों में सामुदायिक भोज (धाम) पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में राज्य में कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा के लिए गत दिनों शिमला में आयोजित एक उच्च स्तरीय बैठक में यह निर्णय लिया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में कोविड-19 के मामलों में तीव्रता से हो रही वृद्धि चिंता का विषय है। प्रदेश सरकार इस महामारी के प्रसार को रोकने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है और सरकार ने कई कठोर निर्णय भी लिए हैं। सरकार ने विवाह और अन्य सामाजिक आयोजनों में केवल 20 लोगों को ही शामिल होने की अनुमति देने का निर्णय लिया है। प्रदेश के सभी शैक्षणिक संस्थान और श्रद्धालुओं के लिए मंदिर भी 10 मई तक बंद रहेंगे। सभी सरकारी कार्यालयों में पांच कार्य दिवस होंगे और 10 मई तक कार्यालयों में श्रेणी तीन व चार की 50 प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में ज्यादा कोविड प्रभावित जिलों जैसे कांगड़ा, मण्डी, शिमला, सोलन, ऊना और सिरमौर के अस्पतालों में बिस्तरों की क्षमता बढ़ाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। प्रदेश में कोविड के सैम्पल लेने के कार्य में तेजी लाई जाएगी और रिपोर्ट भी कम समय में उपलब्ध करवाने के प्रयास किए जाएंगे। बाहरी राज्यों से प्रदेश में आने वाले लोगों पर निगरानी रखने के लिए एक प्रभावी तंत्र विकसित किया जाएगा। देश के अन्य राज्यों से प्रदेश में आने वाले लोगों को 14 दिनों तक होम आइसोलेशन में रहना अनिवार्य होगा और इन्हें अपने आने की सूचना स्थानीय प्रशासन और पंचायती राज संस्थाओं व शहरी स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों से साझा करनी होगी।

बाहरी राज्यों से प्रदेश में आने वाले लोगों पर निगरानी रखने के लिए प्रभावी तंत्र

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में टीकाकरण अभियान में और तेजी लाई जाएगी। अभी तक 16,65,481 लोगों को कोविड की खुराक दी गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कोविड-19 के मामलों पर निगरानी के लिए चार कमेटियों का गठन किया गया है। लॉजिस्टिक कमेटी में राज्य इलैक्ट्रॉनिक्स डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन के प्रबंध निदेशक अरिंदम चौधरी को संयोजक सदस्य नियुक्त किया गया है। यह कमेटी ऑक्सीजन की उपलब्धता, ऑक्सीजन गैस सिलेण्डर के ऑर्डर की समयबद्ध उपलब्धता, जिले में मरीजों के लिए ऑक्सीजन सिलेण्डर की आपूर्ति और अतिरिक्त बिस्तरों की क्षमता उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी निभाएगी। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के एसएसओ डॉ. राजेश ठाकुर के नेतृत्व में कोविड-19 मरीज/ एम्बुलेंस प्रबंधन कमेटी जिला स्तर (शेष पृष्ठ 11 पर)

कोविड रोगियों के लिए बिस्तर क्षमता 5000 तक बढ़ाने का निर्णय

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों मंडी जिले के सुंदरनगर में नवनिर्मित मातृ एवं शिशु अस्पताल का दौरा कर वहां उपलब्ध सुविधाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की। यह अस्पताल कोविड-19 रोगियों के लिए समर्पित किया गया है। उन्होंने सलापड़ में बीबीएमबी कालोनी के पुराने भवनों का भी दौरा किया ताकि आवश्यकता पड़ने पर कोविड-19 रोगियों के लिए अतिरिक्त सुविधाओं की संभावनाओं का पता लगाया जा सके। मुख्यमंत्री ने श्री लाल बहादुर शास्त्री राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय नेरचौक में कोविड-19 की स्थिति के दृष्टिगत बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश में कोविड-19 मामलों में तीव्र वृद्धि को देखते हुए राज्य सरकार ने प्रदेश में कोविड रोगियों के लिए बिस्तर की क्षमता को बढ़ाकर लगभग 5000 करने का निर्णय लिया है। नेरचौक अस्पताल के निकट परिसर में अतिरिक्त 100 बिस्तरों वाले अस्थायी अस्पताल का कार्य भी जल्द पूरा कर दिया जाएगा। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार किसी भी विपरीत स्थिति का सामना करने के लिए अपनी क्षमता को और अधिक बढ़ाने के प्रयास कर रही है।

मुख्यमंत्री का सुंदरनगर में नवनिर्मित मातृ एवं शिशु अस्पताल का दौरा

कांगड़ा जिले के राधास्वामी परिसर, परौर में कोविड रोगियों के लिए एक हजार बिस्तरों तक की क्षमता वाले अस्थायी अस्पताल में परिवर्तित कर इसे क्रियाशील बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मंडी में एमसीएच भवन का काम एक माह के भीतर पूरा हो जाएगा, जिसके लिए अतिरिक्त धन उपलब्ध करवाया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने बाहर से प्रदेश में प्रवेश करने वाले लोगों से आरटीपीसीआर परीक्षण की नेगेटिव रिपोर्ट साथ लाने और दो सप्ताह की अवधि के लिए होम आइसोलेशन में रहने का आग्रह किया है। मुख्यमंत्री ने (शेष पृष्ठ 11 पर)

कोविड-19 प्रबंधन के लिए चार कमेटियां गठित

प्रदेश में कोविड-19 के मामलों पर निगरानी के लिए चार कमेटियों का गठन किया गया है। आपदा प्रबंधन के अंतर्गत गठित राज्य कार्यकारी समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य सचिव ने इन समितियों के गठन को स्वीकृति प्रदान की है जिनमें लॉजिस्टिक कमेटी, कोविड-19 रोगी एवं एंबुलेंस प्रबंधन समिति, सीएसआर कमेटी और मीडिया कमेटी शामिल हैं। लॉजिस्टिक कमेटी में हिमाचल प्रदेश राज्य इलैक्ट्रॉनिक डवेल्पमेंट कॉर्पोरेशन (एचपीएसइडीसी) के प्रबंधन निदेशक अरिंदम चौधरी को संयोजक, आयुर्वेद विभाग की संयुक्त निदेशक राखी, राज्य कौशल विकास निगम के महाप्रबंधक सन्नी शर्मा, स्वास्थ्य सेवा निदेशालय के डॉ. जितेन्द्र चौहान को नोडल अधिकारी और ओएसडी डॉ. जसवाल को सदस्य नियुक्त किया गया है। यह कमेटी ऑक्सीजन की उपलब्धता, ऑक्सीजन गैस सिलेण्डर के ऑर्डर की समयबद्ध उपलब्धता, जिले में मरीजों के लिए ऑक्सीजन (शेष पृष्ठ 11 पर)

प्रधानमंत्री की पुरस्कृत पंचायतों को बधाई

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस, 2021 के अवसर पर गत दिनों वर्चुअल माध्यम से आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए देश की पुरस्कार विजेता पंचायतों को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने ग्रामीण क्षेत्रों में एकीकृत संपत्ति सत्यापन समाधान प्रदान करने के लिए आधुनिक तकनीक द्वारा गांव में सर्वेक्षण और मैपिंग (एसवीएएमआईटीवीए) स्वामित्व योजना का शुभारंभ भी किया। प्रधानमंत्री ने पुरस्कार विजेता पंचायतों के बैंक खातों में पुरस्कार राशि भी हस्तांतरित की और एसवीएएमआईटीवीए योजना पर आधारित कॉफी टेबल बुक जारी की। प्रधानमंत्री ने 5002 गांवों में लगभग 4.09 लाख संपत्ति मालिकों को ई-प्रॉपर्टी कार्ड के वितरण का भी शुभारंभ किया। स्वामित्व योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण नियोजन के लिए एक सटीक भूमि रिकॉर्ड तैयार करना और संपत्ति संबंधी विवादों को कम करना, ग्रामीण भारत के नागरिकों को ऋण और अन्य वित्तीय लाभ हासिल करने के लिए अपनी संपत्ति का उपयोग वित्तीय संपत्ति के रूप में उपयोग करने के लिए सक्षम करके (शेष पृष्ठ 11 पर)

पंचायतों के काम-काज पर केन्द्र सरकार की मोहर

योगराज शर्मा

लोकतंत्र की बुनियादी इकाइयों पंचायतों के कामकाज पर केन्द्र सरकार ने अपनी मुहर लगाई है। बेहतर कार्य-निष्पादन करने वाली देश की चुनिंदा पंचायतों को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सम्मानित किया है। राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री ने वर्चुअल माध्यम से पंचायतों को इन पुरस्कारों से नवाजा। स्मरण रहे कि हिमाचल प्रदेश कोई- पंचायत पुरस्कारों में राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान हासिल हुआ है। ई-पंचायत पुरस्कारों देश भर में द्वितीय स्थान हासिल करने के अतिरिक्त प्रदेश की आठ अन्य पंचायती राज संस्थाओं को विभिन्न श्रेणियों के पुरस्कारों से भी पुरस्कृत किया गया है। इनमें जिला परिषद बिलासपुर, पंचायत समिति देहरा, पंचायत समिति नादौन, जिला कुल्लू की कुंगश व मंगलौर पंचायत कांगड़ा जिला की घोड़पीठ, हमीरपुर की किटपल और सिरमौर जिला की लाणा बालटा पंचायत को बेहरीन कार्यों के लिए पुरस्कृत किया गयाहै। इसके साथ उन्हें सम्मान राशि भी दी गई है। सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिए चयनित जिला परिषद् को 50 लाख, पंचायत समिति को 30 लाख और पंचायतों को 10 लाख रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया है। जिला परिषद बिलासपुर को पण्डित दीन दयाल उपाध्याय पंचायत सशक्तीकरण पुरस्कार मिला है। पंचायत समिति देहरा गोपीपुर कांगड़ा व पंचायत समिति नादौन हमीरपुर को भी दीन दयाल सशक्तीकरण पुरस्कार मिला है। जिला कुल्लू के आनी की कुंगश पंचायत व बंजार की मंगलौर को भी दीन दयाल सशक्तीकरण पुरस्कार मिला है। कांगड़ा की ग्राम पंचायत घोडपीठ भदरैणा को नानाजी देशमुख और जिला हमीरपुर की पंचायत किटपल को ग्राम पंचायत डेवलपमेंट प्लान (जीपीडीपी) पुरस्कार मिला है। जिला सिरमौर की ग्राम पंचायत लाणा बालटा पंचायत को बाल मित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वैसे भी आम लोगों को स्वच्छ एवं पारदर्शी सुशासन प्रदान करने की दिशा में हिमाचल प्रदेश लगातार अग्रसर है। (शेष पृष्ठ 11 पर)

- प्रधानमंत्री ने ई-पंचायत पुरस्कारों से नवाजी पंचायतें
- हिमाचल को राष्ट्रीय स्तर पर मिला दूसरा स्थान

'स्वर्ण जयंती नारी संबल' नई पहल

✍ संजय सैनी

राज्य सरकार ने समाज के कमजोर व पिछड़े वर्गों के व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के हित में अनेक कदम उठाकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है। एक अप्रैल, 2021 से राज्य सरकार ने वर्ष 2021-22 में 40 हजार अतिरिक्त लाभार्थियों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान करने का निर्णय लिया है। इसके अतिरिक्त, सरकार द्वारा वरिष्ठ महिलाओं के लिए विशेष योजना 'स्वर्ण जयंती नारी संबल' शुरू की गई है।

राज्य सरकार ने अपने पहले ही निर्णय में राज्य के अधिक से अधिक लोगों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाने के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन की पात्रता की आयु सीमा को बिना किसी आय सीमा के 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष किया है। सरकार का यह निर्णय पिछड़े व कमजोर वर्गों के उत्थान के प्रति वचनबद्धता को दर्शाता है।

सरकार ने जहां समय-समय पर सामाजिक सुरक्षा पेंशन में बढ़ोतरी की है वहीं कमजोर व पिछड़े वर्ग के लोगों को सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान की है।

वर्तमान राज्य सरकार ने अपने गत तीन वर्ष के कार्यकाल के दौरान सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 1,63,607 नए मामले स्वीकृत किए हैं। जिनमें वर्ष 2018-19 में 97,139, वर्ष 2019-20 में 23,442 और वर्ष 2020-21 में 43,026 नए मामले स्वीकृत किए गए है। राज्य सरकार द्वारा वर्तमान में राज्य में कुल 5,77,604 पात्र व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान की जा रही है।

राज्य सरकार ने एक अप्रैल, 2020 से विधवाओं तथा दिव्यांगजनों को मिलने वाली सामाजिक सुरक्षा पेंशन को 850 रुपये से बढ़ाकर एक हजार रुपये प्रतिमाह किया है। 80 वर्ष या इससे अधिक आयु वर्ग के पात्र पेंशनरों तथा 70 प्रतिशत या इससे अधिक दिव्यांगजनों को राज्य सरकार 1500 रुपये प्रतिमाह सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान कर रही है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन पर राज्य सरकार लगभग 862 करोड़ की राशि व्यय कर रही है।

सरकार ने स्वर्ण जयंती नारी संबल योजना के अन्तर्गत 65 वर्ष से 69 वर्ष तक की आयु की सभी पात्र वरिष्ठ महिलाओं को बिना आय सीमा के एक हजार रुपये प्रतिमाह सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान की जाएगी। इससे राज्य की लगभग 60 हजार महिलाएं लाभान्वित होंगी।

वरिष्ठ महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा पेंशन का दायरा बढ़ाने के उद्देश्य से सरकार ने स्वर्ण जयंती नारी संबल योजना भी शुरू की है। इस योजना के अन्तर्गत 65 वर्ष से 69 वर्ष तक की आयु की सभी पात्र वरिष्ठ महिलाओं को बिना आय सीमा के एक हजार रुपये प्रतिमाह सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान की जाएगी। इससे राज्य की लगभग 60 हजार महिलाएं लाभान्वित होंगी। इस योजना पर भी राज्य सरकार लगभग 55 करोड़ रुपये खर्च किए जाने हैं।

राज्य सरकार की सामाजिक सुरक्षा पेंशन से 5.78 लाख व्यक्ति लाभान्वित

✍ अरुण पटियाल

हिमाचल प्रदेश ने अपने पूर्ण राज्यत्व के 50 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं तथा प्रदेश सरकार ने इस वर्ष को पूर्ण राज्यत्व स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य पर मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने अपने बजट 2021-22 में 'स्वर्ण जयंती नारी संबल योजना' शुरू करने की घोषणा की है।

वृद्धावस्था पेंशन का लाभ उन वरिष्ठ नागरिकों को मिलेगा, जिनके परिवार में किसी अन्य व्यक्ति को सरकारी सेवा की पेंशन न मिल रही हो अथवा जो संपन्न वर्ग से संबंध न रखते हों, ताकि पेंशन योजना का लाभ जरूरतमंदों को मिल सके। इसके लिए प्रदेश सरकार की ओर से जल्द ही आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए जाएंगे। प्रदेश सरकार का यह सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

वृद्धावस्था पेंशन का लाभ उन वरिष्ठ नागरिकों को मिलेगा, जिनके परिवार में किसी अन्य व्यक्ति को सरकारी सेवा की पेंशन न मिल रही हो अथवा जो संपन्न वर्ग से संबंध न रखते हों, ताकि पेंशन योजना का लाभ जरूरतमंदों को मिल सके। यह सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

जिला ऊना के तहत बंगाणा उपमंडल की मुच्छाली ग्राम पंचायत निवासी कमला देवी, केसरी देवी सहित अन्य महिलाओं ने सरकार के इस निर्णय की तारीफ की है। वह कहती हैं 'महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में लिया गया यह फैसला सराहनीय है। समस्त प्रदेश की महिलाएं मुख्यमंत्री की इसके लिए आभारी हैं। अब 65-69 वर्ष के आयु वर्ग की महिलाओं को भी 1000 रुपये पेंशन मिल सकेगी तथा महिलाएं सम्मान के साथ अपना जीवन-यापन कर सकेंगी।' इस ऐतिहासिक निर्णय से पहले भी मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद पहली ही कैबिनेट बैठक में वृद्धावस्था पेंशन की आयु सीमा 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष करने का ऐलान किया था। वर्तमान में 70 वर्ष से अधिक आयु के 2.90 लाख वृद्धजन 1500 रुपये की मासिक पेंशन पा रहे हैं। पिछले तीन वर्षों में लगभग 1,63,607 सामाजिक सुरक्षा पेंशन के नए मामले स्वीकृत किए गए हैं। प्रदेश सरकार ने दिसंबर 2020 तक सामाजिक सुरक्षा पेंशन के तहत 642.58 करोड़ रुपये वितरित किए हैं।

प्रदेश सरकार ने इसके अतिरिक्त सामाजिक सुरक्षा पेंशन के तहत बिना किसी आय सीमा के वृद्धावस्था पेंशन राशि को बढ़ाकर 1500 रुपये किया है। साथ ही सामाजिक सुरक्षा पेंशन को बढ़ाकर 850 रुपये, जबकि विधवाओं और दिव्यांगजनों की पेंशन को बढ़ाकर 1000 रुपये किया गया है।

70 वर्ष की आयु पूर्ण करने के उपरांत पिछले एक वर्ष से वृद्धावस्था पेंशन ले रहे बंगाणा उप-मंडल की मुच्छाली ग्राम पंचायत निवासी शक्ति चंद कहते हैं 'सरकार ने वृद्धावस्था पेंशन के लिए आयु सीमा घटाकर 70 वर्ष की है, जिससे काफी लाभ मिला है। हम मुख्यमंत्री का धन्यवाद करते हैं। कोरोना महामारी के दौरान सरकार की इस पेंशन से काफी राहत मिली और परिवार का गुजारा हो पाया।' इस समय प्रदेश में 5.78 लाख व्यक्ति राज्य सरकार की सामाजिक सुरक्षा पेंशन का लाभ ले रहे हैं, जिनमें से 3.85 लाख वृद्धावस्था पेंशन लाभार्थी हैं। मुच्छाली निवासी रुकमणी देवी तथा राम चंद भी प्रदेश सरकार का 1500 रुपये प्रतिमाह पेंशन के लिए धन्यवाद करते हैं। उनका कहना है कि सरकार की पेंशन जीवन में एक नई रोशनी लेकर आई है तथा मुश्किलें कम हुई हैं। साथ ही बुढ़ापे में सम्मान व आत्मविश्वास की भावना जागृत हुई है।

वैश्विक महामारी कोरोना से लड़ने में कारगर साबित हो रही आयुर्वेदिक पद्धति

● उपमा ठाकुर

विश्व की सबसे पुरानी चिकित्सा पद्धतियों में से एक आयुर्वेद को प्राचीन समय से ही भारत में महत्त्व दिया जाता रहा है। जिसके सार्थक परिणाम लोगों को प्राचीन समय से ही मिलते रहे है। वर्तमान समय में वैश्विक कोरोना महामारी के इस दौर में आयुर्वेद ने एक बार फिर स्वास्थ्य उपचार में अपनी भूमिका को साबित किया है, जिससे आयुर्वेद का महत्त्व और बढ़ गया हैं।

कोरोना संक्रमण से निपटने में आयुर्वेदिक पद्धति ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रदेश में आयुर्वेद को और अधिक लोकप्रिय बनाने का श्रेय वर्तमान राज्य सरकार को जाता है। राज्य सरकार द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को प्रदेश में सुदृढ़ करने की दिशा में अनेक पग उठाए गए हैं। प्रदेश के सामान्य एवं दुर्गम क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने में आयुर्वेद विभाग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

राज्य में वर्तमान समय में 1252 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य संस्थान राज्य के लोगों को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं, जिनमें 1185 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र, 34 आयुर्वेदिक अस्पताल, 14 होम्योपैथी स्वास्थ्य केन्द्र, तीन यूनानी स्वास्थ्य केन्द्र, चार आमची स्वास्थ्य केन्द्र और 12 अन्य संस्थान हैं। प्रदेश में आयुर्वेदिक पद्धति की लोकप्रियता का अन्दाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि वर्ष 2019-20 में कुल 42 लाख 7 हजार 504 रोगियों में से 41 लाख 9,559 बहिरंग रोगियों और 97,945 अंतरंग रोगियों ने अपना उपचार आयुर्वेद पद्धति से करवाया है।

कोरोना महामारी के दृष्टिगत आयुर्वेद विभाग द्वारा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले मधुयष्ट्यादि कषाय (काढ़ा) का भी वितरण किया जा रहा है। यह काढ़ा कोरोना योद्धाओं सहित वरिष्ठ नागरिकों को निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है। अब तक इस काढ़े के लगभग डेढ़ लाख पैकेट वितरित किए गए हैं और भविष्य में 7 लाख से अधिक पैकेट बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में आयुर्वेद पद्धति को बढ़ावा देने के लिए मण्डी जिला के जोगिन्द्रनगर, हमीरपुर जिला के नेरी, शिमला जिला के रोहड़ू और बिलासपुर जिला के जंगल झलेड़ा में हर्बल गार्डन स्थापित किए गए हैं। इन हर्बल गार्डनों में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे उगाए जा रहे है जिनका उपयोग विभिन्न प्रकार की औषधियों को तैयार करने में किया जाता हैं।

आयुर्वेद विभाग द्वारा प्रदेश में अनेक कल्याणकारी योजनाएं क्रियान्वित की जा रही है। औषधीय पौधों की खेती योजना के अन्तर्गत आयुर्वेद विभाग द्वारा औषधीय पौधों की खेती के लिए विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

राष्ट्रीय आयुष मिशन के अन्तर्गत विभाग द्वारा जिला शिमला के ठियोग, जिला सोलन के कसौली, जिला मण्डी के करसोग, जिला चम्बा के तीसा, जिला हमीरपुर के भोरंज और जिला ऊना के बंगाणा में अनिमिया की रोकथाम के लिए कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। आयुर्वेद विभाग द्वारा प्रदेश के आयुर्वेदिक अस्पतालों में आयुष्मान भारत योजना के तहत स्वास्थ्य कार्डों के माध्यम से चिकित्सा बीमा का लाभ प्रदान किया जा रहा है।

राष्ट्रीय आयुष मिशन के अन्तर्गत विभाग द्वारा जिला शिमला के ठियोग, जिला सोलन के कसौली, जिला मण्डी के करसोग, जिला चम्बा के तीसा, जिला हमीरपुर के भोरंज और जिला ऊना के बंगाणा में अनिमिया की रोकथाम के लिए कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। आयुर्वेद विभाग द्वारा प्रदेश के आयुर्वेदिक अस्पतालों में आयुष्मान भारत योजना के तहत स्वास्थ्य कार्डों के माध्यम से चिकित्सा बीमा का लाभ प्रदान किया जा रहा है।

भारत सरकार की आयुष्मान भारत योजना के अन्तर्गत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा आयुर्वेद विभाग के केन्द्रों को स्वास्थ्य कल्याण केन्द्रों में उन्नयन करने की मंजूरी दी गई है, जिसके तहत गर्भावस्था और प्रसव, नवजात और शिशु स्वास्थ्य देखभाल, बाल्यावस्था और किशोर स्वास्थ्य देखभाल आदि का प्रबन्धन किया जाएगा। इस योजना के तहत स्वास्थ्य कल्याण केन्द्रों में योग प्रशिक्षक की सेवाएं भी ली जाएंगी, जिसका उद्देश्य पंचायत स्तर पर आम जनता को योग से जोड़ कर उन्हें योग से लाभान्वित करना है।

वर्ष 2019-20 में आयुर्वेद विभाग को भारत सरकार से 84 स्वास्थ्य कल्याण केन्द्रों और वर्ष 2020-21 में 56 स्वास्थ्य कल्याण केन्द्रों की स्थापना की अनुमति प्राप्त हुई है। विभाग द्वारा वर्ष 2023-24 तक प्रदेश में 400 आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्रों को स्वास्थ्य कल्याण केन्द्रों में स्तरोन्नत करने का लक्ष्य रखा गया है। इन स्वास्थ्य कल्याण केन्द्रों के लिए केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय आयुष मिशन के अन्तर्गत धनराशि उपलब्ध करवा दी गई है।

योग और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद का अभिन्न अंग है। वर्ष 2014 से प्रत्येक वर्ष 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस भी विभाग द्वारा प्रदेश स्तर से लेकर उपमण्डल स्तर तक मनाया जाता है। आयुर्वेद विभाग द्वारा चयनित 471 स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रत्येक शुक्रवार को प्रातः 9.30 से 11.30 के मध्य साप्ताहिक योग दिवस शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 25,872 लाभार्थी लाभान्वित हो चुके हैं।

विभाग द्वारा स्कूल अडॉप्शन कार्यक्रम भी शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 1,712 विद्यालयों को अपनाया गया है। इन विद्यालयों में विभाग विद्यार्थियों को व्यक्तिगत स्वच्छता, दैनिक जीवनशैली, भोजन के पोषण, सामान्य बीमारियों और आयुष के माध्यम से नशीली दवाओं के दुरुपयोग सम्बन्धी जागरूकता प्रदान कर रहा है। इस प्रकार योग एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर सुखी जीवन जीने के लिए प्रेरित करने में विभाग एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

प्रदेश में राष्ट्रीय आयुष मिशन के अन्तर्गत भारत सरकार मौजूदा आयुष संस्थानों के सुदृढ़ीकरण एवं उन्नयन के लिए अनुदान प्रदान करने के साथ-साथ आयुष संस्थानों के माध्यम से रोगियों को प्रदान की जाने वाली दवाइयों की खरीद के लिए राशि उपलब्ध करवाई जा रही है। अब तक आयुष मंत्रालय द्वारा विभाग को 57 करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध करवाई गई है। हिमाचल में स्वास्थ्य क्षेत्र को और अधिक मजबूत करने के लिए सरकार ने 2021-22 के बजट में 3016 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है।

राज्य सरकार कोविड से उत्पन्न किसी भी स्थिति से निपटने को पूरी तरह से तैयार : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर शिमला से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रीय पंचायत दिवस के अवसर पर पंचायत प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस 2021 के अवसर पर गत दिनों शिमला से वर्चुअल माध्यम से राज्य के पंचायती राज संस्थाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए राज्य सरकार का पूर्ण सहयोग करें और संबंधित पंचायतों में होम आइसोलेशन में रह रहे लोगों की सहायता करने के अतिरिक्त लोगों को कोविड टीकाकरण के लिए भी प्रेरित करें।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि आज राज्य के लिए कोविड-19 के मामलों में वृद्धि एक बड़ा खतरा है। उन्होंने कहा कि इस महामारी की पहली लहर के दौरान पंचायती राज संस्थाओं और शहरी निकायों के प्रतिनिधियों ने इस महामारी के कारण उत्पन्न संकट में लोगों की सहायता करने में सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा जरूरतमंदों को निःशुल्क भोजन, मास्क, सेनिटाइजर आदि प्रदान किए गए। उन्होंने कहा कि इस बार वायरस का प्रसार अधिक तेज और ज्यादा घातक है जो चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि ऐसे में पंचायती राज संस्थाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों की भूमिका और बढ़ गई है। उन्हें अपनी संबंधित पंचायतों के लोगों की मदद के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा निर्वाचित प्रतिनिधियों को वायरस के खिलाफ टीकाकरण के लिए लोगों को प्रेरित करने में भूमिका निभानी चाहिए क्योंकि वायरस से खुद को बचाने के लिए यही एक प्रभावी रास्ता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्थिति काफी चिंताजनक है लेकिन लोगों को घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि राज्य सरकार किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

- ई-पंचायत में राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने पर पंचायती राज विभाग को बधाई
- मण्डी, हमीरपुर व ऊना में तीन टेलीमेडिसिन केन्द्रों का शुभारम्भ

उन्होंने कहा कि राज्य में बिस्तरों व ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था है। उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं के चुने हुए प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि वे इस वायरस के प्रसार को रोकने के लिए राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों और मानक संचालन प्रक्रिया का कड़ाई से पालन करने के लिए लोगों को प्रेरित करें। उन्होंने देश के अन्य हिस्सों से राज्य में वापिस आने वाले प्रदेशवासियों से आग्रह किया कि वे एक सप्ताह तक अपने घरों में होम आइसोलेशन में रहे और यदि कोई लक्षण हो तो स्वेच्छा से कोविड परीक्षण करवाएं। उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि वे अन्य राज्यों से आने वाले लोगों के घरों का दौरा करें और उन्हें होम आइसोलेशन में रहने के लिए प्रेरित करें।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के लिए धन कोई कमी नहीं है। 15वें वित्त आयोग ने राज्यों में पंचायतों के लिए 1600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। राज्य सरकार ने इसमें से 200 करोड़ रुपये पंचायतों के लिए जारी कर दिए हैं। उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं के चुने हुए प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि अपनी-अपनी पंचायतों में सभी विकासात्मक परियोजनाओं में गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित करें। वर्तमान राज्य सरकार ने राज्य में 412 नई पंचायतों का गठन किया है जिसका उद्देश्य पंचायतों को अधिक प्रतिनिधित्व देना है। उन्होंने कहा कि राज्य में पूर्व भाजपा सरकार के कार्यकाल में ही पंचायती राज संस्थाओं में 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 1992 में देश में 73वां संविधान संशोधन पंचायतों को सशक्त बनाने और पंचायती राज संस्थाओं को सुदृढ़ करने के लिए किया गया था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में राष्ट्र प्रगति और समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री ने पंचायती राज विभाग को ई-पंचायत में राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा पुरस्कार हासिल करने के लिए बधाई दी। उन्होंने पुरस्कार विजेता पंचायतों के प्रधानों को भी बधाई दी।

मुख्यमंत्री ने ऊना जिला के थानाकलां, मण्डी जिला के थुनाग और हमीरपुर जिला के अवाहदेवी में तीन टेलीमेडिसिन केन्द्रों का वर्चुअली शुभारंभ भी किया। उन्होंने कहा कि राज्य के दूरदराज के क्षेत्रों के लोगों को विशेष सेवाएं प्रदान करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि टेलीमेडिसिन केन्द्र इन क्षेत्रों के लोगों को बेहतर विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे।

केन्द्रीय वित्त और कॉरपोरेट मामले के राज्य मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि टेलीमेडिसिन सेवाओं से दूरदराज के क्षेत्रों के लोगों को अपने घर द्वार के नजदीक विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त होगीं। उन्होंने कहा कि दूरदराज के क्षेत्र के लोगों को टेलीमेडिसिन सेवाएं उपलब्ध करवाना प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग का बेहतरीन उदाहरण है।

कांगड़ा, ऊना, सिरमौर व सोलन में रात्रि कर्फ्यू

कोरोना के मामलों में तेजी से हो रही वृद्धि के दृष्टिगत राज्य सरकार ने प्रदेश के चार जिलों कांगड़ा, ऊना, सोलन और सिरमौर में 27 अप्रैल मध्य रात्रि से 10 मई तक रात्रि 10 बजे से सुबह 5 बजे तक कोरोना कर्फ्यू लगाने का निर्णय लिया है। यह निर्णय गत दिनों मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में हुई उच्च स्तरीय बैठक में लिया गया।

राज्य में आने वाले सभी आगन्तुकों को 72 घंटों के भीतर आरटीपीसीआर परीक्षण अनिवार्य करने का भी निर्णय लिया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि राज्य में आने वाले किसी व्यक्ति ने यदि कोविड आरटीपीसीआर परीक्षण नहीं करवाया है तो उसे अपने निवास स्थान पर 14 दिन तक होम क्वारन्टीन रहना होगा। उनके पास घर आने के 7 दिन के बाद स्वयं परीक्षण करवाने का विकल्प भी होगा और यदि परीक्षण नेगेटिव पाया जाता है तो उन्हें होम क्वारन्टीन में रहने की आवश्यकता नहीं होगी।

बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय निकाय अपने-अपने क्षेत्र में मानक संचालन प्रक्रिया और दिशा-निर्देशों को प्रभावी रूप से लागू करने में शामिल होंगे और उनके पास उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने का अधिकार होगा ताकि कोरोना महामारी को फैलने से रोका जा सके।

बैठक में स्थानीय स्तर पर विशेष कार्यदल गठित किए जाने का निर्णय लिया गया ताकि सभी धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समारोहों के दौरान मानक संचालन प्रक्रियाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके। इन दलों को सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों और मानक संचालन प्रक्रियाओं का उल्लंघन करने वाले लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का अधिकार होगा।

निर्धन परिवारों को दो माह का निःशुल्क अनाज

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत देश के निर्धन परिवारों को आगामी मई और जून माह के लिए निःशुल्क पांच-पांच किलो अनाज वितरित करने के निर्णय के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार का यह सराहनीय निर्णय है जिससे प्रदेश के निर्धन परिवार भी लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के संकट में प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश के हर वर्ग को सरकार की ओर से हरसंभव सहायता प्राप्त हो रही है।

ओलावृष्टि से हुए फसल नुकसान का मूल्यांकन करने के निर्देश

राज्य में बे-मौसमी बर्फबारी, ओलावृष्टि और भारी बारिश के कारण फसलों और फलों को हुए भारी नुकसान की समीक्षा के लिए मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में एक उच्च- स्तरीय बैठक आयोजित की गई।

मुख्यमंत्री ने राज्य के उपायुक्तों को निर्देश दिए कि वे अपने-अपने जिले में फसलों को हुए नुकसान का मूल्यांकन करें ताकि राहत प्राप्त करने के लिए नुकसान की रिपोर्ट केंद्र सरकार को भेजी जा सके।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य के लगभग सभी जिलों में बे-मौसमी बर्फबारी, ओलावृष्टि और बारिश से सेब, गेहूं और मटर की फसल को भारी नुकसान हुआ है, जो चिंता का विषय है।

उन्होंने उपायुक्तों को यह भी निर्देश दिए कि वे बीमा एजेंसियों को फसल बीमा योजना के अन्तर्गत कवर की गई फसलों के नुकसान का मूल्यांकन करने के लिए एजेंटों को कहें ताकि नुकसान का पता लगाकर किसानों को शीघ्र मुआवजा प्रदान किया जा सके।

सभी वयस्कों से कोविड टीकाकरण करवाने का आग्रह

स्वास्थ्य सचिव श्री अमिताभ अवस्थी ने गत दिनों शिमला में राज्य के पात्र व्यक्तियों से जल्द से जल्द कोविड-19 टीकाकरण करवाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि लोगों को कोरोना की दूसरी लहर की गंभीरता समझने की जरूरत है, जो पहली लहर की अपेक्षा कहीं अधिक है। इस लहर में अधिक संख्या में लोग इस बीमारी के कारण मृत्यु का ग्रास बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि सामाजिक दूरी, हाथों को बार-बार धोने और मास्क का उपयोग करने जैसी सावधानियों से ही इससे बचा जा सकता है।

स्वास्थ्य सचिव ने कहा कि मीडिया में रिपोर्ट्स आई हैं कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा गंभीर रोगियों की संख्या को छुपाया जा रहा है, जो गलत है। उन्होंने कहा कि इस महामारी की शुरुआत से जिलावार परीक्षणों की संख्या के साथ-साथ लम्बित परिणाम, किए गए परीक्षणों के प्रकार, कोविड पॉजिटिव व्यक्तियों की संख्या, मौतों की संख्या के साथ दैनिक मीडिया बुलेटिन जारी किया जा रहा है। शुरुआत में यह बुलेटिन दिन में तीन बार और अब दिन में दो बार जारी किया जा रहा है। विभिन्न स्तरों पर बिस्तरों की उपलब्धता की जानकारी संबंधित लिंक पर अपडेट की जा रही है, जो सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध है।

किसानों की सुविधा के लिए प्रदेश में खोले जाएंगे गेहूं खरीद केंद्र

प्रदेश सरकार ने किसानों की सुविधा और उनके हितों को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष राज्य में ही गेहूं खरीद केन्द्र खोलकर गेहूं खरीद को ज्यादा सुदृढ़ करने का निर्णय लिया है। कृषि मंत्री श्री वीरेन्द्र कंवर ने गत दिनों शिमला में यह जानकारी देते हुए कहा कि प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों जैसे कांगड़ा, सोलन, सिरमौर और ऊना के किसान अपनी उपज पड़ोसी राज्यों पंजाब और हरियाणा में बेचने जाते हैं जिसके कारण उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए उनकी सुविधा के लिए प्रदेश में ही गेहूं खरीद केंद्र खोलने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में लाहौल-स्पिती व किन्नौर जिलों को छोड़कर बाकी सभी जिलों में गेहूं की फसल उगाई जाती है और इस वर्ष लगभग 672 हजार मीट्रिक टन गेहूं उत्पादन होने का अनुमान है। राज्य सरकार ने इस वर्ष गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1975 रुपये तय किया है। श्री वीरेन्द्र कंवर ने कहा कि कृषि विभाग व विपणन बोर्ड की मदद से गेहूं की खरीद के लिए सिरमौर जिला के पांवटा साहिब व काला अम्ब, ऊना जिले में कांगड़ (हरोली) व टकराला और जिला कांगड़ा के फतेहपुर में खरीद केन्द्र खोले गए हैं। उन्होंने सोलन जिले के नालागढ़ में गेहूं खरीद केन्द्र खोलने के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि इस वर्ष अब तक प्रदेश में लगभग 6701 क्विंटल गेहूं की खरीद की जा चुकी है। पांवटा साहिब में 5570, काला अम्ब में 367, ऊना जिला के कांगड़ में 379.50 व टकराला में 132 तथा जिला कांगड़ा के फतेहपुर में 252.50 क्विंटल गेहूं की खरीद की गई है। उन्होंने विभाग को गेहूं खरीद के लिए समय रहते प्रबंध करने और खरीद केन्द्रों पर सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए ताकि खरीद केन्द्र पर आने वाले किसानों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

सरकार ने वर्ष 2021-22 के लिए गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1975 किया तय

कोविड-19 : घर से बाहर निकलते वक्त हाथों पर सैनिटाइजर और मुंह पर मास्क जरूरी

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

मैं हल्के बोझ की दुआ नहीं मांगता मैं तो मजबूत कन्धों की दुआ मांगता हूं।
- अज्ञात

लोकतंत्र की बुनियादें पुरस्कृत

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और कोई भी देश, राज्य या संस्था सही मायने में लोकतांत्रिक तभी मानी जा सकती है जब शक्तियों का सही विकेन्द्रीकरण हो एवं विकास का प्रवाह ऊपरी स्तर से निचले स्तर की ओर होने के बजाए निचले स्तर से ऊपरी स्तर की ओर हो। पंचायती राज संस्थानों को लोकतन्त्र की मूल इकाई माना जाता है, जो ग्रामीण भारत के स्थानीय स्वशासन की प्रणाली है। इसलिए यदि पंचायतें सशक्त होंगी तो लोकतंत्र स्वतः सुदृढ़ होगा। ग्रामीण भारत के परिवर्तन के लिए फ्लैगशिप योजनाओं के प्रभावी और कुशल कार्यान्वयन में पंचायतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। देश के विकास को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा स्थानीय स्वशासन की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। सम्पूर्ण देश में पंचायतों के बीच कई उत्कृष्ट प्रदर्शनकर्ता हैं जिन्हें पहचानने और प्रोत्साहित करने की समय-समय पर आवश्यकता रहती है। केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों/ केन्द्र शासित प्रदेशों की सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली पंचायतों को प्रोत्साहित करने के लिए उनके द्वारा जनहित कार्यों के लिए पुरस्कृत किया जाता है। क्योंकि मजबूत पंचायतें आत्मनिर्भर गांव का आधार है। हमारी पंचायतें जितनी मजबूत होंगी उतना ही लाभ अन्तिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंच सकेगा। इसी सोच के साथ हिमाचल प्रदेश सरकार पंचायती राज से जुड़ी व्यवस्थाओं, बुनियादी ढांचे के सुदृढ़ीकरण के साथ उन्हें आधुनिक बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। राज्य में पंचायतों के सशक्तीकरण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर तरीके से उपयोग किया जा रहा है। पंचायतों के माध्यम से स्थानीय लोगों को विभिन्न प्रकार की ऑनलाइन सुविधायें मुहैया करवाई जा रही हैं। प्रदेश सरकार का सदैव यही प्रयास है कि ग्राम पंचायतों के काम-काज में पारदर्शिता, दक्षता लाए जिसके लिए पंचायतों के विभिन्न कार्यों की निगरानी के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जा रहा है। नवगठित पंचायतों को छोड़कर प्रदेश की सभी पंचायतों को इंटरनेट की सुविधा से जोड़ा जा चुका है। लोग विभिन्न सेवाओं का ऑनलाइन उपयोग कर रहे हैं। इन पंचायतों में परिवार रजिस्टर, जन्म, मृत्यु और विवाह के पंजीकरण जैसी विभिन्न सेवाएं ऑनलाइन पंजीकृत हैं। इसलिए हिमाचल प्रदेश को ई-सुविधा मुहैया करवाने के लिए भारत सरकार द्वारा हाल ही में ई-पंचायत के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर दिल्ली से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअल कार्यक्रम में यह पुरस्कार दिया। इसके अतिरिक्त प्रदेश के आठ पंचायती राज संस्थानों को भी विभिन्न राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया। इनमें जिला परिषद् बिलासपुर, पंचायत समिति देहरा, पंचायत समिति नादौन, जिला कुल्लू की कुंगश व मंगलौर पंचायत, कांगड़ा जिला की घोड़पीठ, हमीरपुर जिला की किटपल और सिरमौर जिला की लाणा बालटा पंचायत को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेहतरीन कार्यों के लिए सम्मानित किया है। इसके साथ उन्हें सम्मान राशि भी दी गई है। सर्वश्रेष्ठ कार्य के लिए चयनित जिला परिषद् को 50 लाख, पंचायत समिति को 30 लाख और पंचायतों को 10 लाख रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया है। जिला परिषद बिलासपुर को पण्डित दीन दयाल उपाध्याय पंचायत सशक्तीकरण पुरस्कार मिला है। पंचायत समिति देहरा गोपीपुर कांगड़ा व पंचायत समिति नादौन हमीरपुर को भी दीन दयाल सशक्तीकरण पुरस्कार मिला है। जिला कुल्लू के आनी की कुंगश पंचायत व बंजार की मंगलौर को भी दीन दयाल सशक्तीकरण पुरस्कार मिला है। कांगड़ा की ग्राम पंचायत घोडपीठ भदरैणा को नानाजी देशमुख और जिला हमीरपुर की पंचायत किटपल को ग्राम पंचायत डेवलपमेंट प्लान (जीपीडीपी) पुरस्कार मिला है। जिला सिरमौर की ग्राम पंचायत लाणा बालटा पंचायत को बाल मित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। सरकार द्वारा दिए गए इन पुरस्कारों का उद्देश्य पंचायती राज से जुड़े लोगों को और बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। जो पंचायतें किन्हीं कारणों से इन पुरस्कारों के लिए तय किए गए मानकों में पीछे रह गई है वे भविष्य में अपनी पंचायतों में बेहतर विकास कार्य कर पुरस्कार पाने का मौका दोबारा हासिल कर सकती है। प्रदेश सरकार द्वारा पंचायती राज संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं जिससे न केवल चयनित प्रतिनिधियों का मनोबल बढ़ रहा है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां बढ़ी है तथा ग्रामीणों के सामाजिक व आर्थिक जीवन में विशेष बदलाव देखने को मिल रहा है।

कोरोना काल में मीडिया की भूमिका

प्रशासन हमारे लिए पहले भी सहायक रहा है और आगे भी रहेगा। हमें खुद की यह सामाजिक जिम्मेदारी समझ कर कार्य मिल कर करना होगा। काश ! यह बुरा वक्त जल्द निकल जाए। जिन्दगी फिर उसी ढर्रे पर लौट आए, हम सब जल्द एक दूसरे से अपने गम और खुशियां बांट पाएं।

✍ डॉ. अदिति गुलेरी

जहां एक ओर कोरोना का एक साल निकल गया, वहीं दूसरी ओर बहुत सारे लोगों को अपने साथ ले गया। मन में एक आशा थी कि हम जल्द इस बुरे दौर से निकल कर पुनः उसी अच्छे वक्त में पहुंच जायेंगे। आज एक साल के बाद भी वक्त भयावह से होता हुआ बदतर होता जा रहा है। हम सभी को कोस रहे हैं और यह कोसना हमारी पुरानी आदत है। हम जानते हैं कि इस तरह से हम कछुए की तरह अपने में ही छिप जाएंगे। कोई प्रिंट मीडिया तो कोई सोशल मीडिया पर आरोप प्रत्यारोप लगाता है। ठीक है बोलने की आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है परंतु कभी-कभी यही बड़बोलापन सभी के लिए नुकसानदायक भी बन जाता है। मान सकते हैं कुछ टीवी चैनल, कुछ अखबार बिके होते हैं लेकिन सभी को एक लाठी से हांकना कहां हमारा अधिकार है।

पहले सोशल मीडिया पर आते हैं। वहां बहुत सारे बुद्धिजीवी बैठे होते हैं। कुछ यह कहते हैं कि ऐसे कोरोना के नकारात्मक संदेश पटल पर न डालें जाएं। उनसे सिर्फ एक सवाल है कि जो ऐसी पोस्ट्स डाल रहे हैं वो सिर्फ इसलिए डाल रहे हैं ताकि आप सतर्क रहें। उन लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों को इस भयावह बीमारी से खोया है। वो नहीं चाहते जो कमी उनको हुई है वो कभी आपको मिले। मान सकते हैं कुछ प्रतिशत गलत संदेश भी जल्दबाजी में डाल दिए जाते हैं जो भ्रामक रहते हैं, उनसे हमें बचना चाहिए। दूसरा पहलू यह भी है जब सोशल मीडिया पर देवी देवताओं के मजाक के संदेश आगे बढ़ रहे होते हैं, पति पत्नी के पवित्र रिश्ते को मजाक बना कर बने चुटकुले हम चटखारे लेकर पढ़ते हैं और आगे भेजने में अपनी शान समझते हैं। सोशल मीडिया के पटल को मजाक या तमाशे के पटल न बनाएं। हम सुनागरिक होने का धर्म अपनाएं, यही व्यक्तिगत धारणा है।

अब बात करते हैं प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की कोरोना के संदर्भ में। बात जब भी आती है हम बड़े विश्वास के साथ इन दोनों स्तम्भों की ओर देखते हैं। प्रिंट मीडिया कभी भी जल्दबाजी में अपना पक्ष नहीं रखता। वह तथ्यों के आधार पर अपनी बात रखता है। कोरोना के इस बुरे दौर में भी प्रिंट मीडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोगों को सच से अवगत करवाया और उन्हें इस महामारी से सचेत भी किया। वही खबरें पाठकों के समक्ष थीं जो सच थीं। चुनावों और परीक्षाओं का दौर भी आया, मेले और त्योहारों का दौर आया, शादियों, मातमों का दौर भी संग आया। हम सब करते रहे बिना किन्हीं सावधानियों के। आरोप - प्रत्यारोप चलते रहे। दो गज की दूरी कब कफन की दूरी में बदल गई, पता भी न चला। हमारी लापरवाही समाज के लिए घातक बन गई। अफसोस मगर हम उससे फिर भी डरे नहीं , सिर्फ इसलिए कि हमारे घर में तो सब ठीक है, पड़ोसी चाहे जाए भाड़ में। बंधुओ, आग लगेगी तो आस - पास भी उसकी लपटें जरूर पहुंचेंगी। सरकारें कोई भी हों अगर लॉकडाउन लगता है तब भी कटघरे में होती हैं, न लगाएं तब भी कटघरे में होती हैं। जब व्यवसाय ठप्प होते हैं, तो आर्थिक व्यवस्था भी चरमराती है, तब भी हम सिर्फ कोसते ही हैं। सार यह है कि हम नहीं सुधरेंगे परन्तु समाज को जरूर सुधारेंगे। सुधारने से पहले हमें अपने आप को और अपनी कार्यप्रणाली को सुधारना होगा। हमें मेलों , त्योहारों , रैलियों, भीड़ वाले स्थानों से बचना होगा। हमें इस समय देश का साथ देना है। अगर कुछ बंदिशें लगती हैं , हमें उनका पालन करना है। जिन्हें नौकरी व्यवसाय के कारण निकलना पड़ रहा है या किसी कारणवश जाना पड़ रहा है वो उनकी मजबूरी हो सकती है। लेकिन जिनकी मजबूरी न हो उन्हें बेवजह बाहर निकलना भी नहीं चाहिए।

परीक्षाएं क्या बच्चों की जान से अधिक जरूरी हैं ? अगर परीक्षाओं पर रोक लगाई गई, वो बच्चों की जान बचाने के लिए जरूरी थी। जिन निर्णयों का स्वागत होना चाहिए, लोगों को उनमें कंजूसी नहीं करनी चाहिए। समाचार पत्रों ने विज्ञापनों वेब टीवी के माध्यमों से पाठकों, दर्शकों में सकारात्मकता, मनोरंजन का भी ध्यान रखा। कोरोना योद्धा के रूप में इन सभी ने अपना बहुत योगदान समाज को दिया। संपादक, पत्रकार अपनी संपूर्ण टीम के साथ अपनी कलम से समाज को इस बीमारी से बचाने हेतु विचारों, भावों से लड़ते रहे।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट पर भी कोरोना का कहर दिखता रहा। मजदूरों के पलायन से लेकर जलती चिताएं मन को व्यथित कर गईं। हमारे डॉक्टर्स, पैरामेडिकल स्टाफ, पुलिस विभाग, जल आपूर्ति विभाग, विद्युत विभाग अपने कार्यों में तन मन से लगे हुए हैं। अब पुलिस हमें नहीं रोकेगी, हमें स्वयं रुकना होगा। प्रशासन हमारे लिए पहले भी सहायक रहा है और आगे भी रहेगा। हमें खुद की यह सामाजिक जिम्मेदारी समझ कर कार्य मिल कर करना होगा।

काश ! यह बुरा वक्त जल्द निकल जाए। जिन्दगी फिर उसी ढर्रे पर लौट आए, हम सब जल्द एक दूसरे से अपने गम और खुशियां बांट पाएं।

जीवन में सफलता का पैमाना केवल अंक ही नहीं

मजबूत संकल्प, आत्मविश्वास, मेहनत, आगे बढ़ने की चाह ही आपको सफलता के कदम चूमने को अग्रसर करती है। जब तक इंसान में सिर्फ नम्बर, रिजल्ट की चाह रहेगी वो जीवन में सफल हो सकता है लेकिन एक सीमित अवधि तक। दुनिया में नाम - ख्याति प्राप्त नहीं कर सकता।

✍ रूपेश कुमार

परीक्षा में ज्यादा नम्बर लेकर आना ही जीवन की राह तय नहीं करता। इसके साथ-साथ ज्ञान भी जरूरी है। सिर्फ अच्छे नम्बर से कोई जीवन में सफलता हासिल नहीं कर सकता है। ना ही डिवीजन से। कभी - कभी थर्ड डिवीजन वाला भी आई.ए.एस., डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए. बन जाता है। आपके परीक्षा का नम्बर आपकी जिंदगी तय नहीं करता ना ही आपकी राह। ये नम्बर तो जीवन का खेल होते हैं। आपका असली ज्ञान, हौसला, आगे बढ़ने की इच्छा, शौक आपके जीवन की राह तय करता है। आपकी सफलता की नींव बनाती है। कभी - कभी अच्छे नम्बर वाले भी फेल हो जाते हैं, कुछ नहीं बन पाते हैं। सिर्फ मार्क्स जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं करती है। आपका मजबूत संकल्प, आत्मविश्वास, मेहनत, आगे बढ़ने की चाह ही आपको सफलता के कदम चूमने को अग्रसर करती है। जब तक इंसान में सिर्फ नम्बर, रिजल्ट की चाह रहेगी वो जीवन में सफल हो सकता है लेकिन एक सीमित अवधि तक। जब इंसान में नॉलेज, आत्मविश्वास, हौसले का हुनर समा जाएगा फिर वो जीवन में आई.ए.एस ही नहीं राष्ट्रपति भी बन सकता है। जीवन में फेल होना कोई बुरी बात नहीं जो फेल होता है वही टॉपर्स होता है। जीवन में कोई फेल नहीं होता वो तो आगे बढ़ता है, सीखता है और समाज को नई राह दिखाता है। आज दुनिया के सबसे समृद्ध देश अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन वो भी जीवन में असफलता की अनेकों सीढ़ियों को पाते गए मगर कभी हार नहीं माने और अमेरिका के राष्ट्रपति बन गये। हमारे भारत के राष्ट्रपति, मिसाईल मैन डॉक्टर ए.पी.जे.अब्दुल कलाम को भी इंडियन पायलट के एग्जाम में साथ ही एक बार पढ़ाई पीरियड में पेपर लीक हो जाने से असफल हो गए लेकिन उन्होंने हौसला, आत्मविश्वास बनाए रखा और बन गये भारत के राष्ट्रपति। दुनिया के सबसे अमीर बिजनेसमैन बिल गेट्स के पास डिग्री नहीं है लेकिन आज सबसे सफल ही नहीं दुनिया के सबसे अमीर आदमी है। बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन जिनको उनकी आवाज के कारण रिजेक्ट किया गया लेकिन आज पूरी दुनिया पर राज कर रहें है। माधुरी दीक्षित अपने आत्मविश्वास, हुनर के दम पर ही पूरी दुनिया के दिलों पर छाई हुई है। स्वर कोकिला लता मंगेशकर जिनके पास किसी बड़ी यूनिवर्सिटी की डिग्री है या जॉब नहीं। वो है तो आत्मविश्वास, हुनर, लग्न और आगे बढ़ने की लालसा तभी आज पूरी दुनिया में महान है। आज दुनिया में जो भी सफल व्यक्ति या ख्याति प्राप्त है उनके पास किसी बड़े संस्था से डिग्री नहीं है ? सिर्फ है तो आत्मविश्वास, नॉलेज, हुनर, आगे बढ़ने की लालसा। जैसे भारतीय उद्योग के जन्मदाता जमशेद रतनजी टाटा अंग्रेजों के जमाने के ख्याति प्राप्त बिजनेस मैन जिनके आत्म विश्वास ने दुनिया के विख्यात लोगों में शुमार कर दिया। एशिया के नम्बर एक उद्योगपति मुकेश अंबानी के पिता धीरूभाई अंबानी जी क्या थे ? क्या उनके पास कोई डिग्री थी ? नहीं न और ना संपत्ति, और ना कोई नौकरी। प्राइवेट जॉब करते थे लेकिन उनके पास आगे बढ़ने की ललक थी, आत्म विश्वास था तब आज वो यहां है। भारतीय गणितज्ञ एस. रामानुजन जो मैट्रिक में फेल, इंटर में फेल लेकिन गणित में 100 में 100 लाने वाले रॉयल सोसायटी लंदन के मेम्बर बन गए क्योंकि उनके पास काबिलियत थी, हुनर था वो था टैलेंट जिनकी पूरी दुनिया दिवानी थी और आज भी है। न्यूटन जो एक सेब के कारण गुरुत्वाकर्षण का नियम, गति का नियम एवं जड़त्व का नियम को खोज निकाला क्योंकि उनके पास सोचने की शक्ति थी जो हर कोई कर सकता है। दुनिया में कोई भी चीज करना आसान है मगर जब उसे आसान सोचा जाए। अल्बर्ट आइंस्टीन जो सापेक्षता के सिद्धांत और द्रव्यमान-ऊर्जा समीकरण $E = mc^2$ की खोज किये। देखने में साधु जैसा भेष मगर उनकी दिमागी क्षमता अतुलनीय थी। जिन्हें कुशल गणितज्ञ माना जाता है। भारतीय स्वर सम्राट मोहम्मद रफी जिन्हें कौन नहीं जानता है। लगभग 1 लाख से ऊपर गाना गाने का विश्व रिकॉर्ड और किसी के पास नहीं है। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की उपलब्धियों को पूरी दुनिया जानती है अपनी काबिलियत के दम पर ही उन्होंने पूरी दुनिया में इतिहास रच दिए। भारतीय क्रिकेट के महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर ने अपने हुनर की बदौलत ही उन्हें पूरी दुनिया क्रिकेट का भगवान मानती है। आपका डिवीजन कुछ भी हो ज्ञान का होना अतिआवश्यक है। कभी हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर कलाम साहब ने कहा था 'छोटा लक्ष्य एक अपराध है' अतः जीवन में नम्बर के पीछे नहीं भागे। ज्ञान, आत्मविश्वास, हुनर के पीछे भागे।

भूल सुधार

गिरिराज साप्ताहिक के 28 अप्रैल के अंक में पृष्ठ चार पर 'स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करती आयुष चिकित्सा प्रणाली' शीर्षक से प्रकाशित लेख में लेखक का नाम अवनीश कुमार पढ़ा जाए। -सम्पादक

जीरो बजट प्राकृतिक खेती में गहन कृषि और जैविक खेती के मुकाबले केवल 10 प्रतिशत पानी और 10 प्रतिशत बिजली की जरूरत होती है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती में कम लागत लगती है क्योंकि इसमें किसान किसी भी तरह के रसायनों का उपयोग नहीं करते हैं तथा किसान केवल अपने द्वारा बनाई गयी चीजों का उपयोग करते हैं जिसके परिणामस्वरूप लागत की अपेक्षा ज्यादा मुनाफा होता है।

शून्य लागत प्राकृतिक खेती
कृषि का बेहतर विकल्प

किसान अनुकूल वैकल्पिक प्रणालियों की तलाश में सुभाष पालेकर की जीरो बजट प्राकृतिक खेती कृषि समुदाय के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है एक विधि है जिसमें खेत और गांव के बाहर से आदानों की कम या शून्य खरीद के कारण फसलों की खेती की लागत लगभग शून्य है। इसका मतलब है कि किसानों को अधिक उपज प्राप्त करने के लिए महंगे उर्वरकों और कीटनाशकों की खरीद करने की आवश्यकता नहीं है।

इस तरह की आधुनिक खेती के अंतर्गत किसान केवल अपने खेत स्तर पर बनाये गए आदानों जैसे जैविक खाद, कीटनाशक, पौधनाशक, कवकनाशक, पौध वृद्धि प्रवर्धक हार्मोन इत्यादि का प्रयोग करते हैं और किसी भी तरह के रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करते हैं।

प्राकृतिक खेती के प्रमुख बिंदु

प्राकृतिक खेती में पोषक तत्वों का मुख्य स्रोत सूरज, हवा और पानी (98.5 प्रतिशत) से आता है तथा बाकी का (1.5-2 प्रतिशत) मिट्टी से मिलता है। देसी गायों का गोबर पोषक तत्त्वों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। एक ग्राम देसी गाय के गोबर में 300 से 500 करोड़ लाभकारी जीवाणु पाए जाते हैं वहीं दूसरी ओर 1 ग्राम विदेशी गायों के गोबर में केवल 7 करोड़ लाभकारी जीवाणु पाए जाते हैं।

प्रमुख कारक

बीजामृतः इसे गाय के गोबर और मूत्र आधारित योगों के साथ बीज उपचार के लिए उपयोग में लाया जाता है जो जड़ों से फैलने वाली बीमारियों तथा बीजों को होने वाली बीमारियों से पौधों को बचाते हैं।

जीवामृतः इसे जीवाणुओं से रोकथाम के लिए उपयोग में लाया जाता है। जीवामृत की वजह से जमीन को पोषक तत्त्व मिलते हैं जो एक उत्प्रेरक का काम करते हैं और मिट्टी में पाए जाने वाले सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को भी बढ़ा देते हैं। इसका छिड़काव सिंचाई के पानी के साथ, सीधा भूमि के ऊपर दो पौधों के बीच में और खड़ी फसल में किया जाता है। इसका उपयोग करने से फसलों की पैदावार में

✍ सचिन कुमार
✍ डॉ. सौरभ सोनी

भी बढ़ोतरी होती है।

मल्चिंग : मल्चिंग का उपयोग मिट्टी की नमी का संरक्षण तथा उसकी प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। मिट्टी की सतह पर तीन तरह से मल्चिंग की जाती है

साइल मल्च : इसमें खेती के दौरान मिट्टी की ऊपरी सतह में मल्च का प्रयोग किया जाता है जो आस-पास की मिट्टी को इकट्ठा करके किया जाता है। इस तरह से मिट्टी की प्रतिधारण क्षमता को भी बढ़ाया जाता है।

स्ट्रॉ मल्च : इस तरह की विशेष मल्चिंग में भूसे का उपयोग सब्जी उत्पादन में किया जाता है। इसमें चावल या गेहूं के भूसे का उपयोग किया जा सकता है जो मिट्टी की गुणवत्ता को भी बढ़ाने में कारगर सिद्ध होते हैं।

लाइव मल्च : इस प्रक्रिया में एक खेत में एक साथ कई तरह की फसलें लगाई जाती हैं जो एक दूसरे को बढ़ने में मदद करती हैं। पालेकर के अनुसार मोनोकोट और डाइकोट एक साथ एक ही खेत में लगाई जाती हैं ताकि मिट्टी और फसलों को सभी आवश्यक तत्त्वों की अनुपूर्ति हो सके। इस तरह की खेती में फलीदार फसलों को चावल और गेहूं के साथ लगाते हैं। फलीदार फसलें नाइट्रोजन निर्धारण में मदद करती हैं जबकि चावल और गेहूं पोटाश, फॉस्फेट और सल्फर जैसे अन्य तत्वों की अनुपूर्ति करते हैं।

वहशा (मिट्टी में नमी) : पौधों को बढ़ने के लिए ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है। पौधे व्हापासा यानि वाष्प की मदद से भी बढ़ सकते हैं।

प्राकृतिक खेती के अभिन्न फायदे

जीरो बजट प्राकृतिक खेती में गहन कृषि और जैविक खेती के मुकाबले केवल 10 प्रतिशत पानी और 10 प्रतिशत बिजली की जरूरत होती है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती में कम लागत लगती है क्योंकि इसमें किसान किसी भी तरह के रसायनों का उपयोग नहीं करते हैं तथा किसान केवल अपने द्वारा बनाई गयी चीजों का उपयोग करते हैं जिसके परिणामस्वरूप लागत की अपेक्षा ज्यादा मुनाफा होता है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती से मिट्टी तथा मिट्टी में पाए जाने वाले सूक्ष्मजीवों की काम करने की क्षमता बढ़ जाती है। जरूरत से ज्यादा रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करने से कुछ समय उपरांत जमीन की उपजाऊ क्षमता कम हो जाती है।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती में रासायनिक खादों और कीटनाशकों के उपयोग न करने से जहर मुक्त भोजन तैयार होता है जो सेहत के लिए लाभकारी सिद्ध होता है।

मधुमक्खियों का कीटनाशक रसायनों से बचाव

मधुमक्खियां अपने स्वभाव के अनुसार फूलों से पराग व रस अपने मौन गृह में लाती हैं जोकि इनके तथा इनके शिशुओं के लिए आवश्यक होते हैं। मधुमक्खियां जब भी फसलों तथा बगीचों में किए गए जहरीले कीटनाशकों के छिड़काव के प्रभाव में आती हैं तब इनकी मृत्यु हो जाती है।

मौनवंशों में विषप्रभाव के लक्षण

मधुमक्खियां जहरीले कीटनाशकों के सम्पर्क में आने के पश्चात बहुत संख्या में मौनगृहों के बाहर मरी हुई देखी जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ रास्ते में ही दम तोड़ देती हैं। कुछ प्रभावित

> मधुमक्खियां अपने स्वभाव के अनुसार फूलों से पराग व रस अपने मौन गृह में लाती हैं जोकि इनके तथा इनके शिशुओं के लिए आवश्यक होते हैं। मधुमक्खियां जब भी फसलों तथा बगीचों में किए गए जहरीले कीटनाशकों के छिड़काव के प्रभाव में आती हैं तब इनकी मृत्यु हो जाती है।

मधुमक्खियां मरने से पहले पराग को छत्तों में डालने में सफल हो जाती हैं। इस प्रकार के पराग से मधुमक्खियों के शिशु मर जाते हैं। मधुमक्खियों की संख्या कम होने पर शिशु फ्रेमों की देखभाल ठीक ढंग से नहीं हो पाती है। मधुमक्खियों का स्वभाव चिड़चिड़ा तथा भड़काऊ हो जाता है और वे तेजी से काटती हैं। प्रभावित मौनगृहों की रानियों के अण्डे देने की क्षमता पर कुप्रभाव पड़ता है क्योंकि नर्स मधुमक्खियां बहुत संख्या में मर जाती हैं।

जहर प्रभावित मौनवंशों की देखभाल

ऐसे बक्सों को दूर ले जाना चाहिए जहां पर रसायनों का छिड़काव न हुआ हो। प्रभावित बक्सों को छाया में रखें जहां उन्हें सही मात्रा में हवा मिल सके। ऐसा करने के लिए बक्सों के टॉप तथा अन्दर वाले कवर को हटा दें और बारीक जालियों से ढक दें। बक्सों की फ्रेमों को दूर-दूर कर दें ताकि हवा सही मात्रा में मिल सके। पानी का प्रबंध भी बक्सों के अन्दर कर देना चाहिए। मधुमक्खियां जहरीले पराग को भी छत्तों में रख देती हैं, ऐसी अवस्था में पराग की फ्रेमों को निकाल कर पानी में डुबो दें तथा जहरीले पराग को निकाल दें।

कीटनाशकों से प्रभावित बक्सों में मधुमक्खियों को चीनी व पराग की खुराक देनी चाहिए ताकि उन्हें बचाया जा सके।

जहां तक हो कीटों से फसलों को बचाने के लिए गैर रासायनिक तरीके ही अपनाएं। रसायनों का प्रयोग अन्य विकल्प न रहने की स्थिति में ही करें।

अगर रसायनों का इस्तेमाल अनिवार्य हो तो छिड़काव से दो दिन पहले समीपवर्ती मौनपालकों को सूचना अवश्य दें ताकि वे जरूरी उपाय कर लें। फसल की फूल अवस्था में छिड़काव न करें।

अनुमोदित मात्रा में ही कीटनाशकों का प्रयोग करें। कीटनाशकों का प्रयोग शाम के समय ही करें जब मधुमक्खियां फूलों पर जाना बन्द कर दें। जहां तक सम्भव हो,

✍ डॉ. अदिति बडियाला
✍ डॉ. प्रेम चन्द शर्मा

वनस्पतिक कीटनाशकों, सूक्ष्मजीव कीटनाशकों तथा काइटिन संश्लेषण अवरोधकों का प्रयोग करें। रसायन की पैकिंग पर दिए गए निर्देशों का पालन करें और आसपास के जल स्त्रोतों को रसायन प्रदूषण से बचाएं अन्यथा मधुमक्खियां पानी पीकर मर जाती हैं।

कीटनाशक विभिन्न संरूपणों में बाजार में मिलते हैं। मधुमक्खियों को इनसे होने वाली हानि भी कम या अधिक होती है। विभिन्न संरूपणों से मौनवंशों को होने वाले खतरों के अनुसार इनको बढ़ते क्रम में इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता हैः

कम हानिकारकः बीज उपचार, दानेदार। **मध्यम हानिकारकः** सान्द्रित इमलशन घोल, घुलनशील घोल, अल्ट्रावाल्युम छिड़काव। **अत्यधिक हानिकारकः** धूल, सूक्ष्म दानेदार।

बगीचों में या फसलों के आसपास अगर खरपतवारों में फूल आ चुके हों तो छिड़काव से पहले उन्हें नष्ट कर दें ताकि मधुमक्खियों को फूलों पर जाने से रोका जा सके। कीटनाशक रसायनों का उपयोग उन विधियों से करें जिनसे अपेक्षाकृत कम नुकसान पहुंचता है जैसे बीज उपचार पनीरी को कीटनाशी घोल में डुबोना, कीटनाशी को जड़ों में डालना, व्हर्ल में दवाई डालना, फलदार पौधों में इन्जेक्शन विधि इत्यादि।

विष तीव्रता के अनुसार कीटनाशकों का वर्गीकरण

बहुत कम जहरीले कीटनाशक : किसी भी समय प्रयोग किए जाने वाले। मैलाथियॉन सी.जी., पाइरीथ्रम, डाइफ्लूबेन्जुरॉन, डाइकोफोल, बी.टी., एन.पी.वी., लाइम सल्फर इत्यादि।

कम जहरीले कीटनाशक : विष तीव्रता छिड़काव के 3-4 घण्टे बाद। फोरेट सी.जी., ऑक्सिडेमेटोन मिथायल, फोसालॉन इत्यादि।

अधिक जहरीले कीटनाशक : विष तीव्रता छिड़काव के 10 घण्टे बाद। क्लोरपाइरीफॉस, डाइमिथोएट, डेल्टामैथरिन, साइपरमैथरिन, फेनवलेरेट, क्वीनलफॉस, मोनोक्रोटोफॉस इत्यादि।

मौनपालकों द्वारा ली जाने वाली सावधानियां

जिन फसलों पर फूल खिलने के दौरान बार-बार छिड़काव करने की आवश्यकता पड़ती है उनसे मौनवंशों को दूर रखें। मौनालय, छिड़काव वाले स्थान व कीटनाशक भण्डारों से दूरी बनायें।

अधिक जहरीले कीटनाशकों को प्रयोग में लाने के लिए मौनगृहों को या तो उस क्षेत्र से हटा दें या फिर मौनगृहों के प्रवेश द्वार को बंद कर दें। अगर संभव हो तो छिड़काव के समय मौनवंशों को 3-4 कि.मी. दूर नई जगह में ले जाएं। चींटियों से बचाव हेतु तीव्र विषाक्त या विषाक्त गंध वाले रसायनों का प्रयोग मौनालय में न करें।

किसानों की आय का जरिया बहुद्देशीय वृक्ष : उमरे

उमरे प्रदेश भर में एक हजार मीटर तक की ऊंचाई पर मिलने वाला हिमाचल प्रदेश का एक बहुउद्देशीय वृक्ष है जिसका उपयोग भोजन, चारे व ईंधन के रूप में किया जाता है। यह औषधीय और पोषक गुणों से भरपूर होने के साथ -साथ अपने धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्त्व के कारण स्थानीय लोगों की जीवन शैली में गहराई से जुड़ा हुआ है। पिछले कुछ वर्षों से यह देखा गया है कि आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण और कृषि विस्तार के कारण उमरे जैसे जंगली खाद्य पौधों का उपयोग करने का हमारा पारंपरिक ज्ञान तीव्रता से घट रहा है और नयी पीढ़ी में यह विलुप्त होने के कगार पर है।

उमरे को इसके वानस्पतिक नाम फिकस रेसीमोसा से जाना जाता है और यह मोरेसी परिवार से संबंधित है। इंग्लिश में इसे क्लस्टर अंजीर, भारतीय अंजीर या गूलर के नाम से जाना जाता है। स्थानीय नाम उमरे इसलिए दिया गया है क्योंकि यह माना गया है कि इसका सेवन उम्र बढ़ाने में सार्थक है। यह एक सदाबहार बड़े आकार का पेड़ है, जो आमतौर पर नदियों के किनारे, खेतों के किनारे, पर्णपाती जंगलों और नम क्षेत्रों में पाया जाता है। उमरे को पवित्र वृक्ष माना जाता है इसलिए कुछ लोग इसे आध्यात्मिक उपयोग के लिए या सजावटी पेड़ के रूप में मंदिर के आस-पास बगीचों या निजी भूमि में उगाते हैं।

खाद्य उपयोग

उमरे के फल और कोमल पत्तियां खाने में प्रयोग की जाती हैं। कच्चे फलों को उबाल कर स्वादिष्ट सब्जी, कचौरी, परांठा तथा आचार बनाने में प्रयोग किया जाता है। पके हुए फलों को सूखा कर पाउडर तैयार किया जाता है तथा इसका उपयोग आटे के रूप में या दूसरे आटे के साथ मिश्रित करके किया जा सकता है। यह पाउडर चीनी और दूध के साथ टॉनिक की भांति भी लिया जा सकता है। पके हुए फल भी खाने में प्रयोग होते हैं। उमरे के फल अप्रैल से अगस्त तक एकत्रित किए जा सकते हैं।

औषधीय गुण :

उमरे के सभी भाग औषधीय मूल्यों से भरपूर हैं और कई बीमारियों का इलाज करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। इसकी जड़ों को हाइड्रोफोबिया के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है। छाल स्त्री रोग संबंधी विकारों, बवासीर, अल्सर, डायरिया, पेचिश, मधुमेह और अस्थमा के उपचार के लिए प्रयोग किया जाता है।

फल कुष्ठ, ल्यूकोरिया, रक्त विकार, जलन, सूखी खांसी और मूत्र संक्रमण के इलाज में सहायक होते हैं। पत्तियों का उपयोग श्वास संबंधित रोगों, आंत रोगों, घाव भरने, बवासीर और त्वचा संक्रमण के खिलाफ प्रयोग किया जाता है। इस पौधे के लेटेक्स को दर्द और सूजन को कम करने के लिए घावों पर बाहरी रूप से लगाया जाता है। चीनी के साथ इसका उपयोग बच्चों में दस्त और पेचिश को कम करने और पुरुषों में यौन शक्ति में सुधार करने के लिए किया जाता है।

आध्यात्मिक महत्त्व :

उमरे को एक पवित्र वृक्ष माना

उमरे का वृक्ष

जाता है। यह नवग्रह पौधों में से एक है। इसकी पत्तियों का उपयोग विवाह समारोह में 'वेद' को सजाने के लिए किया जाता है और आम, पीपल, बुरांस, प्लाखरे के पत्तों के साथ पूजा में होता है। युवा शाखाओं का उपयोग हवन में किया जाता है। संपूर्ण पौधा बुरी आत्मा को दूर रखने वाला माना जाता है, इसलिए बहुत से लोग इस पौधे को अपने घर के पास उगाते हैं।

अन्य उपयोग

उमरे स्थानीय लोगों के लिए ईंधन और चारे का एक अच्छा स्रोत है। इसकी लकड़ी अधिक टिकाऊ नहीं होती है, इसलिए इसका उपयोग कम-गुणवत्ता वाले घरेलू सामान, फलों के लिए पैकिंग के बक्से आदि को तैयार करने के लिए किया जाता है। लकड़ी पर पानी का असर ज्यादा नहीं होता, इसलिए इसका उपयोग फ्रेम बनाने के लिए किया जाता है।

उमरे ढलान, गिली और नदी के तटों के स्थिरीकरण के लिए उपयोग किया जा सकता है क्योंकि इसकी जड़ें भूमि अपरदन को रोकने में सक्षम हैं। उमरे अंजीर, (फिकस केरिका) के लिए एक रूटस्टॉक के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

कमाई के साधन के रूप में : उमरे स्थानीय लोगों, खासकर महिलाओं के लिए कमाई का एक अच्छा साधन है। वे स्थानीय बाजार या मेले में स्वम -सहायता समूहों के माध्यम से उमरे का आचार बेच कर आसानी से 300 से 500 रुपये प्रति किलो कमा लेती हैं। इसके अलावा लोग इसके नर्सरी प्लांट, बीज और फलों को सूखा कर पाउडर के रूप में भी बेच कर कमाई कर सकते हैं।

अगर उमरे के पौधों को गांवों के आस पास जंगलों में उगाया जाये तो ये बदरों को भी एग्रिकल्चर लैंड से दूर रखने में सहायक हो सकते हैं। इसके लिए उमरे के पौधों को वन विभाग द्वारा वन महोत्सव के दौरान लगाए जाने वाले पौधों की सूची में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है। उमरे और इसके जैसे बहुद्देशीय जंगली खाद्य पौधों का उपयोग स्थानीय लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके लिए लोगों में इन पौधों के औषधीय और पोषक गुणों के बारे में जागरूकता लाने तथा इनके सस्टेनेबल उपयोग को बढ़ावा देने की जरूरत है।

✍ डॉ. तारा सेन ठाकुर

एक गांव का सूना होना

एक गांव जिसमें हमारा बचपन होता है और एक घर जिसे नौकरी में रहते या सेवानिवृत्ति के बाद हम बनाते हैं। कुछ खेत और उनके बीच से बची गुजरती पगडंडियां जो हमारी सबसे खूबसूरत संपत्ति होती है। कुछ लोग जो आपको बहुत प्यार करते हैं। कुछ और लोग जो बिना कारण आपसे नफरत और ईर्ष्या करते हैं। कुछ किताबें जिन्हें आप आजीवन सांजते, लिखते छपवाते रहते हैं। कुछ कपड़े, एक दो जोड़ी जैकेट और दो चार पेन जो आपके बेड रूम में किसी अलमारी और किसी कोने में पड़े रहते हैं। एक छाता जो धूप या बारिश के लिए आप दरवाजे के पीछे टांग रखते हैं। कुछ पैसे जिन्हें मुसीबत के लिए आप बैंक में सुरक्षित रख देते हैं. बहुत सी पोस्टें और अनगिनत कॉमेंट जो हमारी फेस बुक वाल पर डिलीट न होने तक चिपके रहते हैं। कुछ अपने जो आपके जाने के बाद चुपके चुपके आपकी यादों के साथ रोया करते हैं.....शायद हम लिखने पढ़ने वालों के पास इतनी सी संपत्ति होती है.....पर साथ कुछ नहीं ले जा पाते। और एक गांव जो आपके बाद सूना हो जाता है और महज उसका पता बरसों बरसों आपके पानी, बिजली, टेलीफोन और आपकी लिखी किताबों में बहुत उदास उदास दर्ज रहता है।

कल अपने गांव आया तो बद्री सिंह भाटिया जी के गांव के सामने सड़क पर काफी देर खड़ा रहा और उनके पुराने और बहुत मेहनत से बनाए नए घर को देखता रहा। कितना उदास लगा था वह गांव....घर और आंगन। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने नया घर बनाया था, बहुत प्यार से। उनका शिमला मन ही नहीं लगता था। गांव के मध्य और सड़क के साथ गांव के सामने उनकी काफी जमीन है जिसके संवारने में उनका अधिक समय निकलता। मैं जब शिमला से गांव आता तो कई बार वे हाथ में दराट लिए सड़क में मिल जाते। कभी रास्ते से उन्हें फोन करता। जब कभी रात को घर आना होता तो भी उनके गांव के सामने से उन्हें फोन कर लिया करता। कभी कभी उनके घर जाकर चाय पी लेते। मेरे और उनके गांव के बीच सात किलोमीटर का अंतर है। उनका गांव ग्याणा जिला सोलन की अर्की तहसील में है और मेरा जिला शिमला का पहला गांव उप तहसील धामी में। अंबुजा सीमेंट की जो मुख्य पत्थर की खाने हैं यानि कशलोग माइन्स, वो भाटिया जी के घर के साथ ही हैं। अब नई खानों से जो पत्थर दाइला जाता है उसकी लंबी कन्वेयर उन्हीं के घर गांव के ऊपर से होती निकलती है। उसका शोर रात-दिन परेशान करता है। साथ ही जब ब्लास्ट होते हैं तो घर के दरवाजें खिड़कियां हिलने लगते हैं। यहां तक कि घरों में दरारें देखी जा सकती हैं। भाटिया जी इस शोर का बार बार न केवल जिक्र करते बल्कि उन्होंने अपनी कहानियों उपन्यासों में बहुत शिद्दत से इसे दर्ज भी किया है। उनका उपन्यास डेंजर जोन इसी सीमेंट फैक्ट्री के भयानक शोर और प्रदूषण के साथ लोगों की तकलीफों का सच्चा सा डॉक्यूमेंट हैं। और भी कितनी ही कहानियां... ? हम दोनों ने शिमला में नौकरी करते हुए लंबा समय साथ गुजारा है। जब नब्बे के दशक में मैंने देश भर की लघु पत्रिकाओं को शिमला मंगवा कर बेचना शुरू किया तो वे एकमात्र साथी थे जिन्होंने उसमें बढ़चढ़ कर सहयोग किया। कितनी गोष्ठियों में हमने प्रदेश व प्रदेश के बाहर साथ साथ भाग लिया। गिरिराज और हिमप्रस्थ में जब वे संपादक थे तो उन्होंने प्रदेश के नवोदित लेखकों को जोड़ा, उन्हें लिखना सिखाया और छापा भी। वे लेखक होने के साथ बहुत अच्छे संपादक थे। उनमें ऊर्जा की कोई कमी नहीं थी। हम योजना बनाते ही रह जाते और उनकी एक या दो किताबें छप कर आ भी जाती। निरंतरता ही निरंतरता थी उनके लेखन में। अलविदा कहने से एक सप्ताह पहले जैसे एक पोस्ट लगाकर और कई अंतरंग मित्रों को व्हाट्सएप भेज कर उन्होंने इस विदाई के संकेत जैसे दे दिए थे। उसमें यह भी छिपा था कि उनके साथ उनकी बेटी और पत्नी भी कोरोना पॉजिटिव हैं। यह बात शिमला में उनके बेटे प्रवीण भाटिया ने भी कन्फर्म की तो इसी वजह से दिल्ली भी नहीं जा पाए।

मेरी पांच दिन पहले जब उनसे दिल्ली बात हुई तो उन्होंने अपनी व परिवार की अस्वस्थता के बारे में काफी बात की थी परंतु संक्रमण का जिक्र नहीं किया। फिर भी लगा ही नहीं कि उनकी स्थिति इतनी बिगड़ जाएगी। बात करने में वही जोश, वही ऊर्जा और वही जानी पहचानी हंसी. ....इसी हंसी में शायद मौत भी छुपी रहती होगी... ? कितनी यादें हैं उनके साथ...कितनी बातें. ....कितना साथ.....कितनी बैठकें....और हजारों लाखों चाय की चुस्कियां.....शिमला मॉल के साथ मिडल बाजार में जिस चाय की दुकान में अक्सर मैं, कुल राजीव पंत, आत्मा रंजन जी, नेम चंद जी, अश्वनी और मदन जी चाय पीते थे उसका नाम 'फ्टाफट' टी स्टाल उन्होंने ही दिया था क्योंकि इस दुकान में आप चाय का गिलास खाली करने के बाद नहीं बैठ सकते। रिट्ज सिनेमा में मेरे दफ्तर में तो पांच बजे के बाद पता नहीं कितनी गोष्ठियों जमती थी जहां सभी इकट्ठे हो जाते।

यही कुछ रह जाता है शेष.....गांव आते उनके घर के सामने अब जब भी रुकूंगा तो महज गांव होगा, भाटिया जी का गांव, उसके बीच चुपचाप सहमा सा उनका घर, उदास खेत, रोती पगडंडियां और ऊपर से चीखती चिल्लाती फैक्ट्री की कन्वेयर। फोन करूंगा पर कोई नहीं सुनेगा और एक दिन हम भी निकल जायेंगे उसी यात्रा पर। आप बहुत याद आएंगे भाटिया जी, बहुत।

एस. आर. हरनोट

स्मृति शेष

अनंत में विलीन साहित्य मर्मज्ञ

साहित्य जगत की जानी मानी शख्सीयत एवं हर दिल अजीज बद्री सिंह भाटिया का यूं अचानक चला जाना हम सभी को स्तब्ध कर गया। अपनी साहित्यिक मंडली में 'भाटिया जी' के नाम से ख्यात बद्री सिंह भाटिया के आकस्मिक अवसान का समाचार 25 अप्रैल को प्रातः फेसबुक से प्राप्त हुआ। उन्होंने देश की राजधानी दिल्ली में अंतिम सांस ली। परिवार जन मित्र रातभर ऑक्सीजन के लिए दौड़ते रहे। जीवन की विडंबना देखिए जो ताउम्र पहाड़ों की स्वच्छंद हवा में विचरण करने वाले सज्जन को जीवन के अंतिम पलों में सांसों को चलाने के लिए आक्सीजन नसीब नहीं हुई।

विश्वास नहीं होता कि भाटिया जी के हंसमुख चेहरे का अब हम दोबारा कभी दिदार नहीं कर पाएंगे। उनका अधिकांश जीवन पहाड़ों की रानी शिमला के मॉल रोड पर शाम को टहलते, ढाबों, रेस्तरां में चाय की चुस्कियां लेते साहित्यिक विमर्श करते, गांव व शहर के मध्य सरकारी बस में सफर करते, कवि सम्मेलनों, साहित्यिक गोष्ठियों व मित्रों से बतियाते हुए बीता। उनकी निगाहें तथा सोच नए से नए कथानक ढूंढने में लगी रहतीं। उनके मित्रों में यह बात प्रचलित थी,
भाटिया जी आए हैं तो कोई न कोई कहानी,
कविता या उपन्यास का प्लाट जरूर लेकर आएंगे।
सुण गल से वार्तालाप आरंभ करने वाले भाटिया जी ने अपनी इसी सोच से एक दर्जन भर कहानी संग्रह, तीन उपन्यास, एक कविता संग्रह, एक संपादित कहानी संग्रह तथा देश व प्रदेश से प्रकाशित पत्रिकाओं में अनेक रचनाएं प्रकाशित कर साहित्य जगत में पहाड़ी संस्कृति के मर्म को बड़े कैनवस पर उतारा। चेहरे पर सदैव मुस्कान, कांधे पर झोला टांगे इस शख्स को कोरोना के सूक्ष्म जीव ने सदा के लिए गहरी नींद में सुला दिया। बस रह गया पीछे यादों का पिटारा। सोलन जिले की अर्की तहसील के गांव ग्याणा के निवासी भाटिया जी का आरंभिक जीवन गांव, खेत, खलिहान, संयुक्त परिवार की जद्दोजहद, पहाड़ी संस्कृति, परंपराओं में बीता। आरंभिक शिक्षा उपरांत, रोजी-रोटी के लिए शहर का रुख किया। इस यात्रा ने उन्हें गतिमान व जीवन की सच्चाइयों व बारीकियों से रू-ब-रू करवाए रखा। उनके इन अनुभवों की स्पष्ट झलक उनके लेखन में दिखती है। उनकी जीवन शैली का प्रमाण वर्ष 1983 में उनके प्रथम कविता संग्रह 'कंटीली तारों का घेरा' में स्पष्ट नज़र आता है। इसमें शहर व गांव के शोषित जीवन पर उनकी कविता -

जिंदगी की जद्दोजहद/ के बीच/ मैंने देखी है
सूखी छातियां पिलाती मां/ और कभी सड़क के किनारे
सोया उनका लाल।

ऐसे ही बिंब, चिराग तले, शहर के विरुद्ध चक्रव्यूह भेद, फसल की बात, रोटी की तलाश रचनाओं में स्पष्ट झलकते हैं जिन्हें एक महान लेखक की श्रेणी में ला खड़ा किया।

देश की आजादी से 42 दिन पूर्व जन्में बद्री सिंह भाटिया का संपूर्ण जीवन संघर्षमय रहा। किसान परिवार से आरंभ हुआ सफर, शिमला के गंज बाजार में आढ़त की दुकान में नौकरी, मेडिकल कॉलेज शिमला में वर्ष 1967 में पहली सरकारी नौकरी, फिर लेखन के शौक ने वर्ष 1984 में सूचना एवं जन संपर्क विभाग से जोड़ा। तीन दशक तक गिरिराज साप्ताहिक, हिमप्रस्थ पत्रिका का संपादकीय कार्य निष्पादन। वर्ष 2005 में सरकारी सेवा के 58 वसंत पूर्ण करने पर संपादक पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के उपरांत, कलम तथा कागज से नाता नहीं तोड़ा। फिर लैपटॉप को अपना साथी बनाकर अपनी उंगलियों को 'की बोर्ड' पर चला कर अपने रचना संसार को समृद्ध किया। फेसबुक, व्हाट्सऐप को अपना साथी बनाया। ये साहित्यिक साथियों के साथ सेतु बना। उनकी फेसबुक पर टिप्पणियां सटीक व सधी हुई होती थीं। वे स्पष्टवादी व बेबाकी से अपनी बात रखने में माहिर थे।

भाटिया जी ने 14 वर्ष की आयु में लिखना शुरू कर दिया था। चचेरे भाई द्वारा लुधियाना से भेजी किताबों को पढ़ने के उपरांत एक आवाज भीतर से उठी कि ऐसा तो मैं भी लिख सकता हूं। और लिखना शुरू किया। पहली कहानी 'बहन आ गई तुम' वर्ष 1967 में दिल्ली की एक पत्रिका में प्रकाशित हुई। फिर तो सिलसिला आगे बढ़ता ही गया। हर विषय पर स्पष्ट सटीक तथा ठोस विचार रखने में माहिर भाटिया जी की कृतियों में मानव के विकास तथा शोषण का विरोध स्पष्ट नज़र आता है। ग्राम्य जीवन की कठिनाइयों, बदलते सामाजिक रिश्ते, समाज में दुःख, पर्यावरण ह्रास, नारी की व्यथा, उनके मुख्य विषय रहे। मां बोली का उपयोग उनकी रचनाओं में बाखूबी झलकता है। पहाड़ी भाषा को आगे बढ़ाने में उनका योगदान गिरिराज में रहा। नए लेखकों को पत्र-पत्रिकाओं से जोड़ने में वे माहिर थे।

सम्मान के रूप में साहित्यिक यात्रा में 'पड़ाव' उपन्यास पर हिमाचल प्रदेश कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी पुरस्कार, कवच कहानी संग्रह पर 2004 का साहित्य सम्मान, हिम साहित्य परिषद् मंडी द्वारा 2001 में सम्मान, वर्ष 2002 में हिमोत्कर्ष संस्कृति एवं जन कल्याण परिषद्, ऊना द्वारा 'हिमाचलश्री साहित्य पुरस्कार' प्राप्त किए। जनवरी माह में हिमाचल के पूर्ण राज्यत्व की 50वीं जयंती पर उनका हिमप्रस्थ में लेख, ओ.सी. हांडा की जीवन यात्रा पुस्तक में उन पर लेख इस बात को दर्शाता है कि वे साहित्य, संस्कृति से निरंतर जुड़े थे। उनकी साहित्य जमात में एक अलग पहचान थी। उनमें शुभ चिंतक सदैव रहते थे। अब शिमला के माल रोड, चाय की दुकान, रेस्तरां में उनके साथी, शुभचिंतकों में इस बात का मलाल रहेगा कि अब भाटिया नहीं आएगा। उसके कथानक अब वे सुन नहीं पाएंगे। हर वक्त कल्पना लोक में कहानी, उपन्यासों का प्लाट ढूंढने में वाला व्यक्ति अब सदा के लिए स्वर्ग लोक का वासी हो गया। लेकिन आने वाली पीढ़ियों में भी अपने कृतित्व के कारण अमर रहेंगे।

विनोद भारद्वाज

एक महनीय साहित्यिक परिजन का जाना

साहित्य के महनीय व्यक्तित्व बद्री सिंह भाटिया जी नश्वर काया को त्याग कर दिवंगत हुए हैं और अनश्वर में विलीन हो गए हैं। पर उनकी अनुभूतियां एवं संस्मरण हम सबके बीच सागर की लहरों की तरह उतरते-चढ़ते रहेंगे। मैं साहित्य का विद्यार्थी नहीं रहा हूं, इस बारे कम ही जान पाया हूं। इसीलिए भाटिया जी के लेखकीय जीवन व कृतित्व पर कुछ भी कह पाने की सामर्थ्य नहीं संजो पा रहा हूं, इस योग्य भी नहीं हूं। कदाचित उनके साथ एक कनिष्ठ सहयोगी के रूप में काम करते हुए, उनके साथ बतियाते-विचरते समय की ओझल सी कुछ बातें, घटनाएं-परिघटनाएं स्मरण हो रही हैं। वर्ष 1995 के अक्तूबर माह में मैं अपने समकक्षों जो पहले से ही मेरे घनिष्ठ मित्र थे, राजेश शर्मा और जय चंद चंदेल (अब दिवंगत) के साथ गिरिराज के संपादकीय कक्ष में प्रविष्ट हुआ तो भाटिया जी ने बहुत ही उत्साहित भाव से हम तीनों का स्वागत किया और हमें अपनी सीटों पर बैठने के लिए निर्देशित भी किया। वह मुझे उनके गूढ़ वार्तालाप व उत्साहपूर्ण-सस्नेहमय व्यक्तित्व से एक मर्मज्ञ व्यक्ति प्रतीत हुए, जो बाद तक जब तक हम साथ रहे, सिद्ध भी हुआ और अब उनके चले जाने के बाद उनका यह पक्ष, उनकी लेखकीय प्रतिभा एवं उपयोगिता और भी प्रखरता लिए हम सबके सामने है। जो कालातीत है उनका साहित्य प्रेम इसी से पता चलता है कि वह आई.जी.एम.सी. की नियमित सेवा छोड़कर सूचना एवं जन संपर्क विभाग में सेवारत हुए ताकि लेखन के अनुकूल वातावरण में रह कर और भी अधिक ऊर्जा के साथ साहित्य सेवा कर सकें और जीविकोपार्जन भी हो, ऐसा उनका बताना था। यह उनके लिए संभव भी हुआ और लेखन के क्षेत्र में कई शिखर छूकर नए आयाम स्थापित किए। वह हम सब कनिष्ठों को साहित्य सर्जना में उन्मुख होने को प्रेरित भी करते थे और कुछ आगे की कहूं तो उकसाते भी थे। पर मैं अपनी कहूं- मैं ठहरा...। उनकी इस सद्प्रेरणा से बहुत से साहित्यानुरागी हुए भी। एक तो मेरे साथ ही है- सरल-सरस-समभावी - आश्विन। यह कवि हृदय है और काव्य रचनारत। उनके सान्निध्य में रहते हुए मेरा बहुत से कथाकारों एवं कवियों से मिलना, उनके साथ कुछ पल गुजारना भी संभव हुआ। इनमें सुप्रसिद्ध कथाकार, एस. आर. हरनोट, तुलसी रमण व नेमचंद अजनबी के नाम तो मैं प्रमुखता से ले ही सकता हूं, कुछ अन्य भी हैं। बहुत से संस्मरण हैं जो मैं बिसर रहा हूं, पर एक जितना मुझे स्मरण हो पा रहा है, यहां जरूर साझा करूंगा। वह ग्रामीण परिवेश से थे। अकसर गांव जाते थे और अपने गांव व घर- परिवार की कहानियां भी सुनाते थे। दाइलाघाट में सीमेंट उद्योग ने ग्राम्य जनजीवन को (कु) प्रभावित किया, इससे वह व्यथित भी थे। यह दर्द उन्होंने अपने उपन्यास 'डेंजर जोन' में उकेरा भी है।

सतपाल

बहुत से संस्मरण हैं जो मैं बिसर रहा हूं, पर एक जितना मुझे स्मरण हो पा रहा है, यहां जरूर साझा करूंगा। वह ग्रामीण परिवेश से थे। अकसर गांव जाते थे और अपने गांव व घर- परिवार की कहानियां भी सुनाते थे। दाइलाघाट में सीमेंट उद्योग ने ग्राम्य जनजीवन को (कु) प्रभावित किया, इससे वह व्यथित भी थे। यह दर्द उन्होंने अपने उपन्यास 'डेंजर जोन' में उकेरा भी है।

उनकी बेटी की शादी में हम कार्यालयी सहयोगी आमंत्रित उस सुअवसर पर तनिक कुछ कार्यालयी व्यवधानों के बीच नर्बदा कंवर, रीना नेगी, जया चौहान, जय चंद (दिवंगत), आश्विन और मैं उनके गांव ग्याणा पहुंचे थे। ग्रामीण परिवेशयुक्त वहां सब सुलभ था। जब भोज के लिए उठना था तो मैं भाटिया जी के एक 'खास' आमंत्रण की प्रतीक्षा में था। उसके लिए उनका मुझसे वादा था। अचानक वह प्रकट हुए और बाजू से पकड़ कर मुझे अंदर ले गए। चंदेल भी मेरे साथ था। हालांकि वे इसका सेवन नहीं करते थे, पर चूंकि मेरे सुरा प्रेम से वह भिज्ञ थे। सो कुछ पल उनके साथ बैठ कर उस 'रस' का आलिंगन किया। चंदेल ने भी दो घूंट लिए थे। उसके लिए उतना ही काफी था। उनके उस स्नेह का आभारी हूं। वह इस संसार में कुछ और लंबा रहते तो कुछ और भी कीर्ति-यश समेटते, साहित्य सर्जना करते। उनकी अकाल विदा से यह सब लंबित रह गया है। संभवतः उस लोक में भी इसी में लीन होंगे। उनके परिवारजनों के प्रति सघन संवेदनाएं।

मां दुर्गा
धनेश्वरी मंदिर

अनुपम है आउटर सिराज के धनाह का ठिरशू मेला

यह मेला 7 बैसाख की संध्या को स्थानीय देवता रखाऊ नाग जी की रथ यात्रा से शुरू होता है। पारंपरिक वाद्य यंत्रों की मधुर धुनों के बीच नाग देवता की रथयात्रा गांव के साथ लगते देवस्थान (देव थाणी) तक निकाली जाती है।

रूप राज शर्मा

हिमाचल का नाम सुनते ही हमारे मस्तिष्क पटल पर जो छवि उभर कर सबसे पहले आती है, वह है बर्फ से लकदक पहाड़ की चोटियां और घने जंगल। लेकिन हिमाचल की असल छवि कहीं ज्यादा व्यापक एवं खूबसूरत है। सुंदरता यहां के पहाड़ों पर बसे छोटे-छोटे गांवों एवं यहां की संस्कृति में बसती है। हिमाचल के गांवों में अनेक रीति-रिवाजों एवं धार्मिक अनुष्ठानों का प्रचलन है। आज भी यहां के लोगों ने इन पौराणिक परंपराओं एवं रिवाजों को जीवित रखा है। हां, हिमाचल की बहुमूल्य संस्कृति आज भी यहां के गांवों में मनाए जाने वाले मेलों एवं उत्सवों में साफ देखी जा सकती है।

ऐसी ही परंपरा को जीवित रखा है जिला कुल्लू के आउटर सिराज के दूरदराज स्थित नित्थर फाटी के छोटे से गांव धनाह ने। यहां हर वर्ष 8 बैसाख के दिन 'ठिरशू' नामक पारंपरिक मेले का आयोजन किया जाता है। यह मेला 7 बैसाख की संध्या को स्थानीय देवता रखाऊ नाग जी की रथ यात्रा से शुरू होता है। पारंपरिक वाद्य यंत्रों की मधुर धुनों के बीच नाग देवता की रथयात्रा गांव के साथ लगते देवस्थान (देव थाणी) तक निकाली जाती है। वहां पहुंचकर नाग देवता अपने निश्चित स्थान पर बैठते हैं नाग देवता की पूजा अर्चना के साथ मां काली का आवाहन किया जाता है इसके पश्चात् ग्रामीणों द्वारा सुंदर पहाड़ी नाटी के साथ नाग देवता के रथ को वापस मंदिर परिसर में लाया जाता है। अगले दिन यानी 8 बैसाख को नाग देवता अपने रथ पर सवार होकर गांव के बीचोबीच स्थित प्रांगण में पूरे विधि विधान के साथ आते हैं।

गांव की महिलाओं द्वारा अपने इष्ट देवता का स्वागत फूल मालाओं धूप एवं अनाज भेंट करके किया जाता है। रखाऊ नाग के आने की खुशी में गांव पारंपरिक लोकगीत 'लाहणे एवं लामण' आदि की धुनों से गूंज उठता है। इसके पश्चात् इस ठिरशू मेले की सबसे आकर्षक परंपरा यानी 'स्वांग' का प्रदर्शन किया जाता है।

महाभारत एवं मुगल काल की घटनाओं एवं सामाजिक जीवन से प्रेरित है स्वांग

ग्रामीणों द्वारा विभिन्न प्रकार के स्वांग जैसे मेंढक नृत्य, मुगल मड्डाण, ढोल बरैटी, ब्रह्मचारी, साहूकार आदि के माध्यम से महाभारत तथा मुगल काल में घटित घटनाओं को जीवंत किया जाता है। 500 से भी अधिक वर्ष पूर्व से इस मेले में स्वांगो के माध्यम से लोगों का मनोरंजन किया जा रहा है। प्रत्येक स्वांग अपने आप में अतीत के रहस्यों एवं संदेश को समाए हुए लोगों का मनोरंजन तो करते ही हैं साथ ही सैकड़ों वर्ष पूर्व के मानव जीवन एवं सामाजिक परिवेश की झलक भी दिखाते हैं। स्वांगो द्वारा पहने गए परिधान एवं मुखौटे आकर्षण का मुख्य केंद्र रहते हैं।

स्वांग के साथ-साथ तलवारबाजी भी है मेले का मुख्य आकर्षण

मेले में स्वांगो के साथ-साथ तलवारबाजी की कला का भी प्रदर्शन किया जाता है। स्थानीय ग्रामीण श्री चांद कुमार शर्मा एवं श्री देशराज शर्मा का कहना है कि उन्हें यह तलवारबाजी की कला अपने पूर्वजों से विरासत में मिली है। प्राचीन समय में गांव के लोगों द्वारा इस कौशल का प्रयोग बाहरी अक्रांताओं से गांव की रक्षा एवं देवता के खजाने की सुरक्षा के लिए किया जाता था। इसी परंपरा को स्थानीय ग्रामीणों ने आज भी जिंदा रखा है। धनाह गांव के लोग तलवारबाजी, कला में आज भी पारंगत है।

मेले में
स्वांग प्रदर्शन

सभी स्वांग कलाओं के प्रदर्शन के उपरांत मैदान के बीच में लगाए गए देवदार के पेड़ (जिसे स्थानीय भाषा में 'पड़ेई' कहा जाता है) के चारों ओर वाद्य यंत्रों की धुनों के बीच एक खेल का आयोजन किया जाता है, जिसमें पेड़ की चोटी पर बंधे देव वस्त्र (स्थानीय भाषा में शाड़ी) को निकालने के लिए गांव के नौजवानों एवं अन्य लोगों में प्रतिस्पर्धा होती है। जो भी व्यक्ति वस्त्र को पेड़ पर चढ़कर निकालने में सफल रहता है उसे नाटी में सबसे आगे नाचने का मौका मिलता है। मनमोहक कुल्लुवी नाटी एवं मधुर धुनों के बीच नाग देवता के रथ को उनकी कोठी में वापिस पहुंचाया जाता है। इसके पश्चात् सभी ग्रामीण सुबह तक अपने इष्ट देवता रखाऊ नाग एवं मां दुर्गा धनेश्वरी की लोकगीत एवं पारंपरिक भजनों से स्तुति करते हैं। रात्रि स्वांग एवं नाटी के प्रदर्शन के बीच सुबह की पहली किरण निकलते ही इस ऐतिहासिक एवं पौराणिक मेले का विधि-विधान के साथ समापन होता है। इस प्रकार यह मेला निश्चित रूप से हिमाचल की बहुमूल्य संस्कृति का परिचायक है, जिसे धनाह वासियों ने आज भी संजोकर रखा है।

लाहुल-स्पीति का हरिद्वार चंद्रभागा संगम

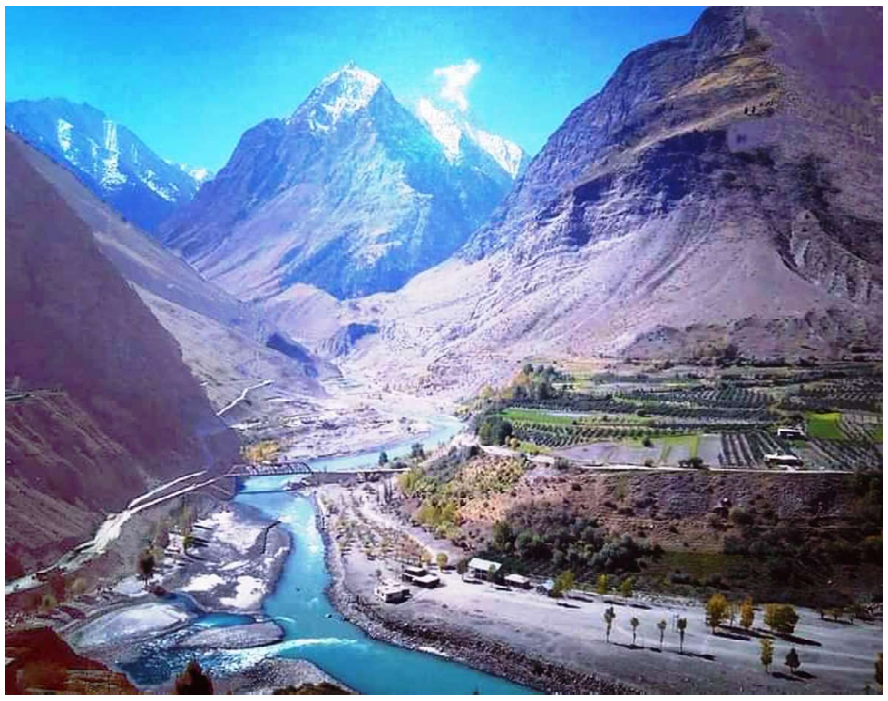

- **बौद्ध मान्यता के अनुसार चंद्रभागा को 'तंगती' यानी स्वर्ग का पानी व मुगलों ने इसे चिनाब कहा**
- **सिकंदर की छाती में आखिरी तीर लगने से युनानियों ने अपशगुनी दिया नाम**
- **संगम पर द्रोपदी का हुआ है दाह संस्कार, लोमश ऋषि की रही है तपोस्थली**

धनेश गौतम

क्या कोई जानता है कि पश्चिमी हिमालय का हरिद्वार लाहुल-स्पीति का चंद्रभागा संगम है। युगों-युगों से चंद्रभागा संगम जहां इतिहास का साक्षी रहा है, वहीं, पश्चिमी हिमालय के लोग इस संगम को हरिद्वार के समान ही पवित्र मानते हैं। कबायली जिला सहित लेह-लद्दाख व चीन अधिकृत तिब्बत के लोगों के लिए यह स्थल हरिद्वार से कम नहीं है। आज भी लोग इसी संगम स्थल पर अपने पूर्वजों की अस्थियां बहाकर पुण्य कमाते हैं। सर्दियों में कबायली लोग छः माह तक बर्फ के कारावास में कैद हो जाते थे और इसी स्थल में अस्थियां प्रवाहित करते रहे हैं। हालांकि अब अटल सुरंग रोहतांग के खुल जाने से कबायली क्षेत्र के लोगों का आवागमन आसान हो गया है लेकिन अब यह स्थल धार्मिक पर्यटन नगरी के रूप में उभर कर सामने आ गया है। हालांकि यहां का धार्मिक महत्त्व पहले से ही हैं लेकिन रोहतांग दर्रा के बंद होने और अति दुर्गम होने के कारण इस स्थल के दर्शन सीमित लोग ही कर पाते थे।

अब अटल सुरंग के खुल जाने से देश-दुनिया के लोगों के लिए यह सुंदर स्थल आकर्षण का केंद्र बन चुका है। अब इस पवित्र स्थल के संरक्षण की भी भी तैयारियां होने लगी है। लाहुल-स्पीति के इस संगम स्थल के इतिहास पर यदि नजर दौड़ाई जाए तो भागा-चंद्रा ने कई युग देखे हैं। बौद्ध मान्यता के अनुसाद नदी का नाम तंगती पड़ा यानी कि स्वर्ग का पानी। बौद्ध धर्म के लोग इस पानी को स्वर्ग से आया हुआ पानी मानते हैं। बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध ग्रन्थ विमान बत्थू में इस नदी को तंगती कहा गया है। अरबी और फारसी में मुगलों ने इस नदी का नाम 'चिनाब' दिया जिसका अर्थ था 'आव ए-चीन' यानी कि चीन से आने वाला पानी। वहीं, युनानी ग्रंथों में नदी का नाम हाईपसिस पड़ा। युनानियों ने इस नदी को अपशगुनी नदी माना, क्योंकि सिकंदर की छाती में आखिरी तीर इसी नदी के तट पर लगा था। माना जाता है कि सिकंदर को यहीं आकर शिकस्त मिली थी। वहीं, वैदिक काल में चंद्रभागा नदी का नाम 'अस्किनी' पड़ा। ऋग्वेद के नदी सोख्त अध्याय में नदी को अस्किनी नाम से पुकारा गया है। पौराणिक काल में शिव पुराण, स्कंद पुराण और महाभारत में इस नदी को चंद्रभागा का नाम दिया है। वहीं, बौद्ध सिद्ध घंटापा ग्रंथ में विस्तार से बताया गया है कि इसी संगम पर द्रोपदी का अंतिम संस्कार हुआ था। यही नहीं इस ग्रंथ में यह भी दर्शाया गया है कि यह स्थल लोमश ऋषि की तपोस्थली है। वर्तमान में इस नदी को लाहुल-स्पीति में चंद्रभागा व वहां से आगे चिनाब के नाम से जाना जाता है। खास बात यह है कि यह नदी पश्चिमी हिमालय के कई देशों को सींचती है जिसमें तिब्बत, भारत व पाकिस्तान भी शामिल है। गौर रहे कि वर्तमान में लाहुल-स्पीति का भागा-चंद्रा संगम स्थल बेहद सुंदर व धार्मिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। लाहुल-स्पीति के पर्यटन में भी यही संगम स्थल चार चांद लगाता है। संगम स्थल को विकसित करने के लिए लाहुल-स्पीति की जनता एकजुट हो चुकी है और यही कारण है कि कुछ वर्ष पहले यहां पर संगम पर्व भी मनाया गया। भविष्य में यहां पर हरिद्वार की तर्ज पर घाट बनाने की भी योजना है। लाहुल-स्पीति के लोगों का कहना है कि वे भौगोलिक तौर पर अति दुर्गम क्षेत्र में रहते हैं जो छः माह तक बर्फ के कारावास में परिवर्तित हो जाता है। उसी स्थिति को नजर में रखते हुए इस क्षेत्र के लोग सदियों से इसी संगम स्थल पर अस्थियां विसर्जित करते आए हैं। इसलिए उनके लिए यह स्थल पवित्र तीर्थ हरिद्वार से कम नहीं है और इस स्थल का वर्तमान में विकास होना आवश्यक है जिससे यहां की धार्मिक आस्था व नदी के इतिहास का संवर्धन किया जा सके।

यह स्थल लाहुल-स्पीति के जिला मुख्यालय केलांग से ठीक सात किलोमीटर पहले देश के सबसे ऊंचे दिल्ली-लेह मार्ग पर पड़ता है। यहां पर चंद्रा व भागा नदी का संगम होता है और यहां से आगे यह नदी चिनाब बन जाती है और दूसरी तरफ पाकिस्तान में जाकर गिरती है। चंद्रा नदी स्पीति घाटी की तरफ से आती है और भागा- चंद्रा दोनों नदियों का उद्गम स्थल बारालाचा दर्रा है जबकि भागा नदी लाहुल घाटी से आती है। खास बात यह है कि बारालाचा दर्रा के एक तरफ से चंद्रा नदी निकलती है जबकि दूसरे छोर से भागा निकलती है। चन्द्रा नदी स्पीति घाटी को सिंचित करती है और भागा लाहुल घाटी को।

वर्तमान में भागा चन्द्रा संगम जाने का रास्ता बिलकुल सुगम है। यदि आप हवाई मार्ग द्वारा कुल्लू-मनाली स्थित भुंतर एयरपोर्ट में उतरते हो तो भुंतर से कुल्लू 10 किलोमीटर का सफर है। यहां से 45 किलोमीटर आगे मनाली पड़ता है जो विश्व भर में पर्यटन के लिए प्रसिद्ध हैं। मनाली के बाद सोलंग नाला होते हुए अटल टनल तक का रास्ता प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है और इस पर कई रोमांचकारी स्थल हैं। मनाली से अटल टनल के 28.5 किलोमीटर के सफर में कई सुंदर नजारे यहां के आकर्षण को और अधिक बढ़ा देते हैं। इसके बाद आधुनिक सविधा से लेस 9 किलोमीटर की अटल टनल रोहतांग टनल में आरामदायक सफर किया जा सकता है। दूसरी तरफ निकलने पर शीत मरुस्थल की सुंदर वादियों के दर्शन हो जाते हैं। टनल के पार कुछ ही दूरी में लाहुल का पहला गांव सिस्सू नजर आएगा और यहां घेपन ऋषि का प्राचीन मंदिर है। घेपन ऋषि के दर्शन के बाद सीधे उसी मार्ग दिल्ली-लेह मार्ग पर आगे बढ़ते गोंदला गांव व और अन्य छोटे गांव आते हैं और गोंदला से आगे तांदी पड़ता है। अटल रोहतांग टनल से तांदी तक का यह सफर 36.8 किलोमीटर का है और बस यहीं पर भागा-चंद्रा नदी का संगम स्थल है। जहां आप लोगों को इस पवित्र स्थल के दर्शन हो जाएंगे। इस संगम से जिला मुख्यालय केलांग की दूरी 9.5 किलोमीटर है। सर्दियों में चंद्रभागा नदी पूरी तरह से बर्फ में जम जाती है और कई बार तो संगम का पानी इतना ठोस हो जाता है कि स्थानीय लोग इस पर आइसकेटिंग तक कर डालते हैं। उस समय यह स्वर्गिक अनुभूति करवाता है। गर्मियों में स्थल के चारों तरफ सुंदर हरियाली रहती है।

कोरोना वायरस से बचाव के लिए हाथों को सेनेटाइज करें

हास्य व्यंग्य

ब्रेकफास्ट बनाम उपाहार

बलिहारी है पश्चिमी जीवन शैली की कि पश्चिम के लोग सुबह से शाम तक कुछ न कुछ खाते ही रहते हैं। पशु-पक्षियों की तरह स्वच्छन्द-निश्चिन्त जीवन जीते हैं, जीने के लिए नहीं, खाने के लिए जीते हैं, डटकर काम करते हैं और जीभर कर खाते हैं। वर्तमान में जीते हैं भविष्य की चिन्ता करके वर्तमान का मजा किरकिरा नहीं करते। मेरे प्रिय शिष्य हैं- नरेन्द्र नाथ 'चट्टान'। उनका कहना है कि हम भारतीय जिस पत्तल में खाते थे, उसी में छेद करने लगे, इसलिये आज प्रीति भोज (बफै सिस्टम) का सूत्रपात हुआ है। प्रीति भोज पर उनकी हास्य फुहार देखिये :-

हम प्रीति भोज में जाते हैं और
ऐसी प्रीत निभाते हैं।
ग्यारह रुपये थमाते हैं और
ग्यारह को ले जाते हैं।।
हम खाते हैं पर जीने के लिये
खाते हैं।
गर फोक्ट का मिल जाये तो
मरते तक खाते हैं।।

हम जो व्रत, उपवास आदि करते हैं ऐसे पाखण्डों से वे दूर रहते हैं, ठीक हमारे पूर्वज महर्षि चार्वाक की तरह- यावज्जीवेत् सुखं जीवेदश्णं कृत्वा घृतां पिवेत् ! 'फास्ट' का अर्थ- अनशन या भोजन न करना है। शयनावधि (सोते रहने का कुल समय) ही उनके शब्दों में 'फास्ट' है जो बिना कुछ खाए-पिए सोने में नष्ट हो गई- व्यर्थ चली गई। सुबह जागकर जब वे चाय के साथ कुछ खाते हैं यही उनके 'फास्ट' का ब्रेक है, ब्रेकफास्ट है, जिसे हम उपवास का 'पारणा' कहते हैं।

कुछ लोग इसे 'जलपान' कहने लगे हैं पता नहीं, किस विद्वान ने इसे यह नाम दे दिया ? जबकि 'जलपान' का शाब्दिक अर्थ- 'पानी पीना' ही होगा, थोड़ा खाना या स्वल्पाहार नहीं। फिर भी अथदिश से प्रचलित 'जलपान' और 'स्वल्पाहार' को स्वीकार कर भी लें तो इससे 'सुबह के नाश्ते' का नहीं, किसी भी समय के नाश्ते का अर्थ निकलता है। यानी जलपान, स्वल्पाहार या नाश्ता किसी भी समय, कभी भी और कहीं भी लिया जा सकता है।

वैसे इस सिलसिले में मुझे 1967-1968 का एक वाकया याद आ गया जब मध्यप्रदेश में 'अंग्रेजी हटाओ, राष्ट्रभाषा लाओ' का अभियान यूनिवर्सिटी और कालेजों के छात्रों ने जोर-शोर से चलाया था, रातों-रात दुकानों, होटलों, कार्यालयों के नाम पट्ट अंग्रेजी से बदलकर हिन्दी में कर दिए गए थे। उसी अवधि में मैं भोपाल गया था, नाश्ता करने के लिए मैं जिस 'होटल' में घुस रहा था, उसका नाम पट्ट पढ़कर मैं चौंक गया लिखा था- 'उपाहार गृह' आस-पास की अन्य होटलों के नाम पट्टों पर भी दृष्टि डाली तो इसे छोड़कर अन्य सभी के नाम पट्टों पर 'उपहार गृह' लिखा देखकर मैं चौंक गया मैं समझ गया कि यह 'Restaurant' के हिन्दीकरण की बलिहारी है, 'आहार' मूल शब्द के पूर्व 'उप' उपसर्ग जोड़कर 'उपाहार' बनाना तो समझ में आ गया किन्तु अन्यों में दीर्घ आ की मात्रा गायब करके 'उपहार' बना दिया गया था जो कि "Gift Center" का हिन्दीकरण है। प्रातः का नाश्ता तीन तरह से किया जाता है। पहला, घर में परिवार के साथ बैठकर। इसमें उतना मजा नहीं है, जितना मजा आगंतुक स्नेहीजन या मेहमान के साथ बैठकर करने में आता है। क्योंकि खिलाकर खाने का आनंद ही और है। दूसरा बाहर का नाश्ता। इसके भी दो प्रकार हैं। पहला होटलों में मित्रों को नाश्ता कराते हुए नाश्ता करना और पेमेन्ट करना अथवा दूसरों के ऑफर पर उनके साथ उन्हीं के पैसों में नाश्ता करना। तीसरा दूसरे के घर में नाश्ता करना अथवा किसी का मुर्गा फंसाकर उससे नाश्ता करके बदले में उसे उपहास का पात्र बनाना। अन्य प्रकार के नाश्तों का स्वाद और मजा तो उसके पेट में जाते ही खत्म हो जाता है।

दूसरों को उल्लू बनाकर या मुर्गा फांसकर किए जाने वाले नाश्ते का स्वाद चिरस्थायी नहीं उत्तरोत्तर मजा देने वाला होता है। मुफ्त नाश्ताखोर जब चटखारे ले-लेकर अपने मुफ्त में दूसरों से नाश्ता कर लेने की विजयगाथा के साथ उसका वर्णन यहां-वहां करते फिरते हैं तब उसका स्वाद क्षण-क्षण में नवीनता पा-पाकर लजीज से- मोस्ट लजीज बनता रहता है।

हमारे एक साथी हैं- स्वामी मिथ्यानंद। सदैव मिथ्या ही बोलने वाले, मिथ्या के अलावा कुछ न बोलने और मिथ्या बोलकर आनंदित होने, दूसरों को हंसाने और चिढ़ाने वाले भी। वे धरोहर हैं। मैं 30 साल पहले जब इस महाविद्यालय में आया था तबसे उनके शरीर में पेट के स्थान पर स्थायी रूप से 30-35 लीटर कैपेसिटी के घड़े को चिपका हुआ देख रहा हूं जो अब मुफ्त का खा-खाकर बढ़ते-बढ़ते पचास लीटर की कैपेसिटी वाला हो गया है।

एक दिन हमारे एक साथी प्रोफेसर की स्थानीय पेपर में रचना छपी। किसी साथी प्रोफेसर ने उन्हें बधाई दी। स्वामी मिथ्यानंद ने सुन लिया। फौरन आ गए, रचना तो उन्होंने पढ़ी नहीं थी, न कभी पढ़ने वाले थे पर बधाई देने में बाप का क्या जाता है? बधाई देते हुए बोले- प्रोफेसर साहब, क्या लिखा है, क्या शैली है हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास के बाद यदि कोई कवि पैदा हुआ है तो आप हैं। जिसकी कविता के मर्म को प्राचार्य के.पी. तिवारी से लेकर हीरालाल तक समझ सकता है।

एक दिन हमारे एक साथी प्रोफेसर की स्थानीय पेपर में रचना छपी। किसी साथी प्रोफेसर ने उन्हें बधाई दी। स्वामी मिथ्यानंद ने सुन लिया। फौरन आ गए, रचना तो उन्होंने पढ़ी नहीं थी, न कभी पढ़ने वाले थे पर बधाई देने में बाप का क्या जाता है ? बधाई देते हुए बोले- प्रोफेसर साहब, क्या लिखा है, क्या शैली है हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास के बाद यदि कोई कवि पैदा हुआ है तो आप हैं। जिसकी कविता के मर्म को प्राचार्य के.पी. तिवारी से लेकर हीरालाल तक समझ सकता है। प्रोफेसर साहब गद्गद् होकर धन्यवाद देते हुए उनके चरणों में झुक गए। फौरन उनके मुंह से आदेश निकला- भई, इतने से काम नहीं चलेगा। इसे सेलीब्रेट करने के लिए सभी को चाय-नाश्ता कराइए। 'हम पांच-सात लोग' उनके साथ सामने होटल की ओर चले।

रास्ते में जो भी मिलता गया- प्रोफेसर, प्रयोगशाला शिक्षक, भृत्य सभी से उके साहब की रचना की तारीफ करते हुए सभी को साथ लेकर होटल पहुंचे। 30-35 लोग हो गए। जो कुछ होटल में था, सभी हम मुफ्तखोरों ने चट कर लिया, चाय पी, पान खाया, स्वामीजी ने बम भोले का प्रसाद- एक पैकिट सिगरेट ली और उके को दो-ढाई सौ का चूना लगाकर महाविद्यालय चले गए। अब तो जब भी उन्हें पता चलता उके साहब की रचना आई है, उनका चाय-नाश्ता पक जाता। एक दिन उन्होंने रचना छपने की बधाई दी तो उके साहब बोले- 'सर आज तो मेरी कोई रचना नहीं आई है' तो वे तपाक से बोले 'अरे भाई आज नहीं आई है तो कल आ जाएगी, इस उपलक्ष्य में आज चाय-नाश्ता हो जाय।

बकौल उन्हीं स्वामी मिथ्यानंदजी के- 'उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी' एक बार संयोग या दुर्योग से कहें किसी मित्र के पुत्र का 'सहायक प्राध्यापक' का म. प्र. पी.एस.सी. इन्दौर से इन्टरव्यू कॉल आया। आप जानते हैं मुझे परमात्मा हमेशा मुफ्त का माल, छप्पर फाड़कर देता रहा है। उन्होंने मुझसे उसे इंटरव्यू दिलाने के लिए साथ में इन्दौर जाने का विनम्र अनुरोध किया। भला, मैं मालेमुफ्त दिलेवेरहम ऐसे शानदार मौके को कैसे हाथ से जाने देता ? वैसे भी मुझे लफ्फाजी से संस्कृत सब्जैक्ट के एक्सपर्ट का पांचवी बार नियुक्ति आदेश आया था। मुझे पांच दिन बाद इंदौर जाना ही था- वहीं पी.एस.सी. में।

मैंने उन्हें बताया मान्यवर मैं पांच दिन बाद तो जाने ही वाला हूं, देख लूंगा। पी.एस.सी. पैपरमैन मेरे परिचित ही नहीं, फैन भी हैं। तब तो उसने उठकर मेरे चरणों का साष्टांग स्पर्श किया, पुत्र को भी कराया और करूणा गद्गद् कंठ से साथ जाने का अनुरोध करने लगे- सर यदि आप साथ चले जाते तो हम पर, हमारे सारे परिवार -सारे खानदान और आने वाली पीढ़ियों पर भी आपका अनंत उपकार हो जाता। 'वो तो ठीक है महोदय, किन्तु इतने दिन पहले से जाकर आपके बेटे को

✍ डॉ. दादूराम शर्मा

इंटरव्यू दिलाकर, उसके लौट आने के बाद के शेष चार दिन मैं कहां ठहरूंगा ? आवास और भोजनादि का भारी व्यय मैं कैसे वहन कर पाऊंगा ? वह आपके परोपकारार्थ मैं वहन कर भी लूं तो मैं सालभर में तेरह दिन मिलने वाली सी. एल. में से मात्र दो दिन बची सी.एल. में इस यात्रा सहित सात दिनों की अवधि की सी.एल. कहां से लाऊंगा, लाल स्याही से मेरी सेवापुस्तिका में दो सी.एल. के बाद के पांच दिन- अंकित हो जाएंगे। और मेरे अगले वर्ष प्राचार्य बनने का मार्ग सदा के लिए अवरुद्ध हो जाएगा। न, बाबा न मैं हवन करके हाथ जलाने वाला मूर्ख ब्राह्मण नहीं। पिता गिड़गिड़ाता रहा, दो दिनों तक आ-आकर मिन्नतें करता रहा। तब जाकर उनसे पच्चीस हजार नकद, आने-जाने का दुगुना यात्रा व्यय और सात दिनों का तीन सितारा होटल में ठहरने का कुल पचास हजार रुपए में सौदा तय हो पाया !

उन्होंने आगे किस्सा सुनाया इन्दौर के एक शानदार तीन सितारा होटल में ठहरे। क्योंकि तब वहां, इन्दौर जैसे छोटे शहर में पांच सितारा होटल कहां थी ? आप तो जानते हैं मेरी प्रातः भ्रमण की आदत है, यह भी जानते हैं कि खुदा अपने इस बंदे पर सदैव मेहरबान रहा है, रहता है और रहेगा। मैं जैसे लिफ्ट के नीचे उतरकर भ्रमणार्थ बाहर निकला मुझे सामने शादी का शानदार शामियाना दिखाई दिया और मेरा भाग्य देखिए कि गेट के बाएं पार्श्व में नयी-नवेली दुल्हन की तरह सजी सिवनी की नंदन सर्विस की टूरिस्ट बस खड़ी दिखी, जिस पर दहेज का बेशकीमती सामान लोड हो रहा था। मैंने उस पर लगे स्वर्णाक्षरों में अंकित बैनर पर गौर किया और वर-वधू के नाम पर दृष्टि डाली, मेरी बांछें खिल गईं।

दुबे परिवार का बैनर मेरी दृष्टि को अपनी ओर खींच रहा था- 'अंकित संग अनन्या' देखकर तो मैं मंत्रमुग्ध हो गया। एक परिचित की दृष्टि मुझ पर पड़ गई- सर आप, अहोभाग्य हमारे जो इस विवाह स्थल पर आपके पवित्र चरण पड़े, हम धन्य हो गए, आपसे हमने, हमारे सारे परिवार ने कई बार जा-जाकर अनुरोध किया था। किन्तु आप आ नहीं पाए। मैंने एहसान जताते हुए बताया कि आपके जाने के बाद मेरा मन मुझे धिक्कारने लगा। मैं पुत्र को साथ लेकर यह कहते हुए कि मुझे शादी की बस तक पहुंचाकर आ जाओ, जब पहुंचा तो पता लगा कि आपकी गाड़ी तो अन्य चौपहिया वाहनों के काफिले के साथ दो घंटे पहले ही रवाना हो चुकी है।

अतः मैंने तुरंत इन्दौर की ए.सी. टू की ऑनलाइन बुकिंग कराई, कार से तुरंत छिन्दवाड़ा पहुंचा तो गाड़ी प्लेटफार्म पर लगी थी और बस छूटने वाली थी। उससे सोते हुए इन्दौर पहुंच गया और सीधे यहां आ रहा हूं। नाश्ते का दौर चल रहा था। सबके बार-बार आग्रह करने पर सेवा में प्रस्तुत एक-डेढ़ किलो रबड़ी डली जलेबियां, कॉफी, आइस्क्रीम का स्वाद चखा, पान अपने विशाल मुखविवर में भरे, दस-बारह पैक कराए और वर के पिता द्वारा बारम्बार आग्रह करने पर खिदमत में पेश-सिगरेट के दो पैकिट जेब में डाले और विजयी योद्धा की मुद्रा में अकड़ता हुआ मंद-मंथर गति से अपने होटल की ओर बढ़ गया।

कविता

पिता का थैला

पिता जी की जब भी काम
से घर की ओर वापसी हाती थी,
उनके कंधे पर लटके थैले पर
हम बच्चों की निगाह होती थी।।

उनका थैला किसी पिटारे से
कम नहीं होता था,
हम सब कुछ न कुछ मांगते थे
पर वो कभी कम नहीं होता था।।

मां के लिए दाल सब्जी
उसमें से निकलती थी,
दादा दादी की दवाइयां
उसी थैले से चलती थी।।

सुबह सुबह हम सब उन्हें
अपनी अपनी जरूरतें गिनवाते थे
वो अपने थैले की क्षमता देख,
हां-ना करते जाते थे।।

एक भी दिन नहीं देखा उन्हें थैले
के बिना घर से बाहर जाते,
ज्यादा बोझ से जब तनी टूट
जाती
देखा था अक्सर उन्हें मां से उसे
सिलवाते।।

हम क्या पढ़ते-लिखते हैं,
वो समझ नहीं पाते थे,
नम्बर जितने भी आते, पर पास
होने पर वो थैले में मिठाई जरूर
लाते थे।

वो हमारे लिए जितना भी कर लें
कभी भी नहीं जताते थे,
वो अपने थैले में सारी दुनिया
के सुख भर लाते थे।।

✍ अतुल कुमार

सामान्य ज्ञान

जल शक्ति अभियान : कैच द रेन?

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 22 मार्च, 2021 को वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से विश्व जल दिवस के मौके पर 'जल शक्ति अभियान : कैच द रेन' का शुभारम्भ किया। यह नदियों को आपस में जोड़ने की राष्ट्रीय स्तर की अपनी तरह की पहली परियोजना है। यह अभियान देश भर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में एक साथ 'कैच द रेन : जहां भी, जब भी संभव हो वर्षा के जल का संग्रह करें' थीम के साथ शुरू किया गया। इस अभियान को देश में मानसून पूर्व और मानसून अवधि के दौरान 22 मार्च, 2021 से 30 नवम्बर, 2021 की अवधि में क्रियान्वित किया जाएगा। इस अभियान का उद्देश्य राज्य और सभी हितधारकों को वर्षा के जल का संग्रहण सुनिश्चित करने के लिए जलवायु परिस्थितियों और मिट्टी की स्थितियों के अनुकूल रेन वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चरर्स का निर्माण करने के लिए प्रेरित करना है।

1 हाल ही में काला नमक चावल महोत्सव कहां आयोजित किया गया ?
2 मिताली एक्सप्रेस किन दो देशों के बीच चलती है ?
3 वर्ष 2019 व 2020 के लिए गांधी शांति पुरस्कार किसे दिया गया ?
4 भारत के प्रथम मुख्य न्यायाधीश कौन थे ?
5 वर्ष 2020 का व्यास सम्मान किसे दिया गया है ?
6 संयुक्त राष्ट्र संघ ने किस वर्ष को मोटे अनाजों का अन्तराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है ?
7 'हाऊ टू एवॉइड ए क्लाइमेट डिजास्टर' के लेखक कौन हैं ?
8 जी-7 राष्ट्रों की 47वीं सम्मिट जून 2021 में कहां प्रस्तावित है ?
9 एटीपी रैंकिग में सर्वाधिक समय तक नम्बर एक खिलाड़ी बने रहने का रिकॉर्ड किस टेनिस खिलाड़ी ने बनाया ?
10. हिमाचल प्रदेश अटल चिकित्सा अनुसंधान विश्वविद्यालय नेरचौक के कुलपति कौन हैं ?
11. स्विटजरलैंड के किस राजदूत ने एक साइन बोर्ड स्थापित कर खजियार को आधिकारिक तौर पर मिनी स्विट्जरलैंड का नाम दिया ?
12. बिल-कालेश्वर मंदिर कहां स्थित है ?
13. डांगी और डेपक किस जिले का मशहूर लोकनृत्य है ?
14. गांधी हत्या का मुकदमा शिमला के किस सुविख्यात भवन में चला था ?
15. हिमाचल प्रदेश में कितनी पंचायतें सड़क सुविधा से जुड़ी हैं ?

प्रस्तुति : मोहित शर्मा

उत्तर- 1. उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर जिले में, 2. भारत व बांगला देश (27 मार्च, 2021 को शुरू की गई), 3. बंगबधु शेख मुजीब उर रहमान (वर्ष 2020), ओमान के दिवंगत सुल्तान काबूस बिद सैद अल सैद, 4. हरिलाल जे. कानिया (26 जनवरी, 1950 से 06 नवम्बर, 1951), 5. प्रो. शरद पगारे को (वर्ष 2010 में प्रकाशित उनके ऐतिहासिक उपन्यास पाटलिपुत्र की सामग्री के लिए), 6. वर्ष 2023, 7. बिल गेट्स, 8. ब्रिटेन, 9. नोवाक जोकोविच, 10. डॉ. सुरेंद्र कश्यप, 11. डब्लू.पी. ब्लेज़र, 12. हमीरपुर, 13. जिला चंबा के छतराड़ी इलाके का, 14. पिटरहॉफ, 15. 3162 पंचायतें (10,488 गांव)

व्यंजन

स्वाद और पोषण का खजाना गेहूं के उत्पाद

भारत में मक्की के बाद गेहूं ही एक ऐसी फसल है जिसे पूरे भारत में उगाया जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार गेहूं का आटा मैदा की अपेक्षा ज्यादा स्वास्थवर्धक है। गेहूं पेट के लिए बहुत हल्की व सुपाच्य होती है।

गेहूं के विभिन्न व्यंजन व खाद्य उत्पाद– गेहूं से आटा बनाने के अलावा भी इसका उपयोग बहुत से खाद्य उत्पाद बनाने के लिए किया जा सकता है।

सीरा

सामग्री : गेहूं =1 कि.ग्रा., घी =80 ग्राम, चीनी=50 ग्राम, पानी =150 मि.ली.

विधि : गेहूं को दो से चार दिन पानी में भिगो कर रखें चार दिन बाद ऊपरी सतह का पानी फेंक दें व बाकि गेहूं को निकाल कर ग्राइंडर में पीस लें फिर पानी से अच्छे से धोकर गहन को निकालकर धूप में छोटे-छोटे गोले बना लें व सुखा लें। सुखाने के बाद इस सिरे को पकाने के लिए 100 ग्राम सीरा लेकर इसमें पानी व चीनी मिला कर पेस्ट बनाएं। घी को गर्म करके इस पेस्ट को उसमें तब तक पकाएं जब तक की कड़ाही के सिरे से न चिपके।

गुजिया – गेहूं का आटा= 2/3 कप, दहीं=1/2 चम्मच, घी =1 चम्मच पानी गूंथने के लिए

भरने के लिये – नारियल 2 कप, खोया 1/2 कप , किशमिश 1/4 कप, पीसी हुई चीनी 1/2 कप, पीसी हुई छोटी इलाइची, घी तलने के लिए, बादाम काजू 1/2 कप पिसे हुए।

विधि – भरने वाले मिश्रण को अच्छे से मिला ले जो पिसने वाली वस्तुएं हैं उनका पाउडर बना लें। आटे में दहीं, घी डालकर अच्छे से गूंथ लें फिर गोल रोटी बना कर उसमें मिश्रण भरकर गुजिया का आकार बना कर बंद कर लें व हल्का भूरा होने तक तल लें।

भटूरे

सामग्री – गेहूं का आटा=100 ग्राम, खमीर = 5 ग्राम, तेल तलने के लिये, आटा गूंथने के लिए पानी

विधि : आटे में खमीर डालकर पानी मिलाकर अच्छे से आटा गूंथ लें व कपड़े से ढक कर डेढ़ घंटे के लिए रख लें जब खमीरीकरण हो जाये तो तेल गर्म करके उसमें भटूरे फ्राई कर लें।

कचौरी : यदि कचौरी बनानी हो तो विधि अनुसार आटा गूंथ लें व अलग से किसी भी दाल जैसे सोयाबीन, माश, दाल चना इत्यादि का मिश्रण भिगोकर छिलके निकाल कर पीस कर मसाले व नमक मिला कर तैयार कर लें व गोल-गोल पेड़े बना कर उसमें मिश्रण को अच्छे से भरें व रोटियां बनाकर तल लें। इसे पूदीने व इमली की चटनी के साथ परोसें।

पिन्नी : सामग्री गेहूं का आटा = 150 ग्राम, मूंगफली पीसी हुई =50 ग्राम, सोया आटा= 75 ग्राम, चीनी =200 ग्राम, बेसन = 75 ग्राम, घी =100 ग्राम, चौलाई दाना भूना हुआ पाउडर =25 ग्राम

विधि–आटे को मिलाकर छानकर भून लें। इसके अलावा मूंगफली का पाउडर व चौलाई दाना को भून कर आटे में मिला लें। 5 से 10 मिनट तक हिलातें हुए पकाएं व गोल गोल पिन्नियां बना लें।

पंजीरी

सामग्री – गेहूं का आटा=100 ग्राम, किशमिश = 15 ग्राम, सौंफ =5 ग्राम, सोया आटा=50 ग्राम, बादाम =15 ग्राम, चीनी=100 ग्राम, मूंग दाल आटा=50 ग्राम, काजू=15 ग्राम, घी= 40 मि.ली., नारियल बुरा =50 ग्राम, छोटी इलाइची =5

विधि : तीनों आटे को अलग भून लें फिर प्लेट में डाल लें। उस पर चीनी, व अन्य भूने हुए काजू बादाम व अन्य सामग्री भी अच्छे से मिला लें। इस पर नारियल बूरा डालें व हवा रहित डिब्बे में रखें।

सीडू

सामग्री – गेहूं का आटा=1/2 कि.लो., खमीर =2.5 ग्राम, हलदी=2 ग्राम, चीनी =10 ग्राम, खसखस/ अखरोट/ माह की दाल/सोया दाल=200 ग्राम, लहसुन=12 कलियां, गरम मसाला =10 ग्राम, मिर्च पाउडर 10 ग्राम, नमक =स्वादानुसार ।

विधि : आटा छान लें थोड़े से गर्म पानी में (100 मिली) खमीर व चीनी मिलाएं फिर इसमें दो चम्मच आटा मिलाकर 20-25 मिनट तक खमीरीकरण के लिए रखें। जब यह आटा दोगुना हो जाये तो आटे गुनगुने पानी से गूंथ लें। अब इस आटे को खमीरीकरण के लिए 3-6 घंटे के लिए सूती गीले कपड़ों से ढक कर रख लो। यदि आपने खसखस सिडू भरने के लिए प्रयोग करना है तो उसे पहले 30 मिनट तक उबाल लें व ठंडा करके पानी निकाल कर मिक्सर में पीस कर पेस्ट बना लें। इसमें अदरक, लहसुन, प्याज का पेस्ट मसाले हल्दी व नमक अच्छे से मिला लें। खमीरीकरण होने के पश्चात् आटे को लें। उसको बेल लें व उसमे मिश्रण भर कर बंद करें व भाप में 15-25 मिनट तक पकाएं। चटनी या

✍ कल्पना आर्य

देसी घी के साथ परोसें। सीडू में भरने के लिए उड़द दाल, सोयाबीन, अखरोट व मूंगफली का प्रयोग भी किया जा सकता है

पूरी

सामग्री : आटा=200 ग्राम, नमक =स्वादानुसार, आलू=500 ग्राम, हरी मिर्च =2 कटी हुई, हरा धनिया कटा हुआ =2 बड़े चम्मच, जीरा =एक चम्मच, धनिया =एक चम्मच, गरम मसाला =1 चम्मच, धनिया =1 चम्मच, तलने के लिए तेल।

विधि : आलू को उबाल कर छिलकर मैश कर लीजिये। आटे को छानकर इसमें सभी मसाले मिर्च धनिया व आलू अच्छे से मिलाकर जरूरत के अनुसार पानी लेकर आटे को अच्छे से गूंथ ले फिर पूरी बना कर तल लें।

चिलरू

सामग्री – गेहूं का आटा =200 ग्राम, पानी =350-400 मि. ली.

विधि : आटे को छानने के बाद धीरे-धीरे पानी मिलाते हुए पतला पेस्ट बनाये। तवे पर तेल लगा कर कटोरी से मिश्रण की पतली तह में फैलाएं व दोनों तरफ से पका लें और आलू के साथ गर्म-गर्म परोसें।

गुलगुले

सामग्री – गेहूं का आटा=200 ग्राम, चीनी =70 ग्राम अखरोट, बादाम, काजू =20 ग्राम, तेल तलने के लिए।

विधि : चीनी को पानी में घोलकर तब तक गर्म करें जब तक की चीनी न घुल जाये। इस घोल में आटे को डाल कर अच्छे से फेंट लें ताकि नर्म घोल बन जाये। इसमें इच्छानुसार अखरोट बादाम, काजू इत्यादि पीस कर मिला लें व 10 मिनट तक छोड़ दें। कढ़ाई में तेल गरम करके गुलगुले तल लें व भूरा होने पर निकाल लें।

आटे का हलवा

सामग्री – आटा=200 ग्राम, पानी =50 मि.ली., घी =100 ग्राम, नारियल बूरा=200 ग्राम, बादाम =10 ग्राम, काजू =10 ग्राम।

विधि : आटे को अच्छे से छान लें फिर कढ़ाई में घी गर्म करके आटे को अच्छे से भून लें चीनी व पानी मिलाकर हिलाते हुए पकायें। जब हलवा पक जाये तो उसमे काजू, बादाम व नारियल के बूरे से सजाएं।

दलिया : नमकीन दलिया, खिचड़ी व मीठा दलिया

दलिया =50 ग्राम, लाल मिर्च पाउडर =5 ग्राम या इच्छानुसार, मूंग दाल =50 ग्राम, घी =तीन बड़े चम्मच कदूकस किया हुआ अदरक 10 ग्राम, हरी मिर्च = एक कटी हुई, टमाटर का पेस्ट =20 ग्राम, हल्दी =5 ग्राम, हरा धनिया पानी =2 कप

विधि : दाल व दलिया को पानी में भिगोकर आधे घंटे के लिए रख लीजिये कुक्कर में घी गर्म करके उसमे जीरा भून लें फिर इसमें अदरक का पेस्ट पकाएं अब इसमें टमाटर का पेस्ट नमक व हल्दी मिला दें, मिर्च व कटी हुई सब्जियां मिला लें अब भीगी हुई दाल व दलिया का पानी निकाल कर कुक्कर में 2 कप पानी डालकर 2 या 3 सिटी लगवाएं और नमकीन खिचड़ी दलिया तैयार है।

मीठा दलिया बनाने के लिए दूध, चीनी व घी का प्रयोग करके बनाया जा सकता है। दाखा बादाम, काजू इच्छानुसार मिलाएं जा सकते हैं।

शक्करपारे

गेहूं आटा =100 ग्राम, सोया आटा= 50 ग्राम, चीनी =80 ग्राम, घी = 30 ग्राम, पानी =गूंथने के लिए, नारियल=20 ग्राम

विधि : चीनी, घी व आटा, सोया आटा व अन्य सभी चीजों को मिला कर नर्म आटा गूंथ लें। मोटी चपाती बनाकर छोटे-छोटे चोकोर या डायमंड आकार में काट लें व तल लें।

कविता

नारी

जीवन क्या है ये,
मां के अहसानों की कहानी है।

कभी कौशल्या व्याकुल
कभी लव-कुश की जुबानी है।

अभिशापों को जो झेले
जीवन सुधा वो न्यारी है।

आंखों में लिए करुणा
जीवन का वरदान नारी है।

बहन बेटी नहीं युग में
मां का अवतार नारी है।

वध हो चुका रावण का
फिर क्यों आज जिन्दा है।

वेदना सुन निर्भया, गुड़िया,
प्रियंका रेड्डी की
भारत मां शर्मिंदा है।।

✍ हितेन्द्र शर्मा

बाल कविता

चंदा मामा

चंदा मामा चंदा मामा
कहां से आए हो तुम
ये सफेद चमकदार कपड़े
कहां से लाए हो तुम

ये तुम्हारे चारों ओर फैले तारे
लगते है। हम सबको प्यारे

चंदा मामा तुम रोज ऐसे ही आना
आते ही प्यारी-प्यारी लोरी सुनाना

तुम जल्दी से आना
तारों की हमें सैर कराना

हमें भी अपनी तरह सजाना
चंदा मामा तुम रोज ऐसे ही आना।

✍ राहुल
कक्षा आठवीं

लघुकथा

पानी की कमाई

वह दूध बेचने का धन्धा करने लगी थी। पहले-पहल तो वह दूध दोहते ही, दूध लेने आए ग्राहकों को बिना मिलावट के दूध दे डालती थी। पानी की एक भी बूंद वह दूध में नहीं मिलाती थी। लेकिन अब वह मंहगाई का रोना रोती। घर के खर्चों की बातें करने लगती। उसके बच्चे भी बड़े हो रहे हैं। पढ़ने जाते हैं स्कूल। ट्यूशन भी पढ़ते हैं। उनका भी खूब खर्चा होता है।

अब जबकि उसके पास गायों की संख्या भी बढ़ गई है। लेकिन ग्राहकों की अधिक संख्या होने पर, वह बेहद लालची हो गई है। अब वह दूध में उतना पानी अवश्य मिलाती है जितना उसमें खप जाए। उसकी मासिक आमदनी भी बढ़ गई थी। वह मन ही मन खुश थी। उसके कई अपने खर्चे भी इसी से निकल जाते। पति के सामने उसे हाथ नहीं फैलाना पड़ता था।

लेकिन उसके बेटे जो पास वाली दुकान पर बार-बार मां से रुपये लेकर सामान लेते थे उनकी आदतें बिगड़ने लगी थीं। वह मां के साथ झूठ बोलकर भी रुपये ठगने लगे थे। कभी कहते प्रोजेक्टवर्क बनाना है तो कभी कहते बच्चे पिकनिक पर जा रहे हैं। वह कोई न कोई नया बहाना ढूंढने में माहिर हो चुके थे। फास्टफूड के वह इतने दीवाने थे कि घर से सुबह लंच लेकर नहीं जाते। मां भी उन्हें मांगने पर झट रुपये देती, पर इतना अवश्य कहती, खूब मन लगाकर पढ़ना। मेरी तरह घास नहीं काटना। मैं तो ठहरी अनपढ़। बच्चे आए दिन मां से रुपये लेते रहते। चटकारे ले-लेकर बाजार की चीजें खाते। स्कूल से भी बंक मारने लगे थे। मां यह नहीं जानती थी, जो उसने पानी डालकर दूध बेचा है तथा रुपये कमाए हैं, वह सारी कमाई पानी में ही जा रही है।

✍ नरेश कुमार 'उदास'

स्वास्थ्य

शहद के औषधीय गुण

शहद एक ऐसी एंटीबायोटिक औषधि है, जो पूर्णतः प्राकृतिक है। स्वास्थ्य से लेकर सुंदरता तक, इसमें हर समस्या का समाधान उपलब्ध है। शहद एक प्राकृतिक मधुर पदार्थ है जो मधुमक्खियों द्वारा पुष्पों के मकरंद को चूसकर तथा उसमें अतिरिक्त पदार्थों को मिलाने के बाद छत्ते के कोषों में एकत्र करने के फलस्वरूप बनता है। दूध के बाद शहद ही ऐसा पदार्थ है जो उत्तम व संतुलित भोजन की श्रेणी में आता है क्योंकि शहद में वे सभी तत्त्व पाए जाते हैं, जो संतुलित आहार में होने चाहिए। एक औषधि के रूप में उसका इस्तेमाल सबसे पहले सुमेरी मिट्टी के टेबलेटों में पाया गया है जो करीब 3000 साल पुराने हैं। लगभग 28 फीसदी सुमेरी चिकित्सा में शहद का इस्तेमाल होता था।

आयुर्वेद में शहद को मधु के नाम से पहचाना जाता है। आयुर्वेद में शहद को मीठा, शुष्क और शीतल होने के साथ-साथ सावरोधी बताया गया है। यह वात और कफ को नियंत्रित करता है तथा रक्त व पित्त को सामान्य रखता है। इसे नेत्र और दृष्टि के लिए बहुत अच्छा माना गया है। यह प्यास को शांत करता है, कफ को बाहर निकालता है, शरीर में विषाक्ता को कम करता है और हिचकियों को रोकता है। इतना ही नहीं शहद मूत्र मार्ग में उत्पन्न व्याधियों तथा निमोनिया, खांसी, डायरिया, दमा आदि में बहुत उपयोगी होता है। यह घावों के पानी को सोखकर भरण प्रक्रिया को तीव्र करता है तथा ऊतकों की वृद्धि को बढ़ाता है। शहद में लगभग 75 प्रतिशत शर्करा होती है, जिसमें से ग्लूकोज, सुक्रोज, माल्टोज, लैक्टोज आदि प्रमुख हैं। शहद में 14 से 15 प्रतिशत तक जल पाया जाता है।

असली और नकली शहद की जांच करने के लिए थोड़ा शहद लें और उसे अंगूठे और बीच की उंगली के बीच रगड़ें। कुछ समय बाद आप देखेंगे कि यह त्वचा में अवशोषित हो जाएगा और आपकी अंगुली को चिपचिपा नहीं करेगा। दूसरी ओर, नकली शहद में अक्सर चीनी होती है, जिस वजह से इसे छूने पर यह बेहद चिपचिपा बन जाता है।

अगर आपके पास शुद्ध शहद है, तो आप उसे लंबे समय तक स्टोर कर सकते हैं। आपको बता दें कि शहद को लंबे समय तक स्टोर करने के लिए आपको उसे एक ठंडे स्थान पर रखना चाहिए। यह प्रकृति में अत्यंत अम्लीय यानि एसिडिक होता है। इसलिए शहद को खराब करने वाले सूक्ष्मजीव और जीवाणु इसकी अम्लीय प्रकृति के कारण पैदा नहीं होते हैं। इसमें दुर्गंध आ सकती है जिससे पता चलता है कि आपका शहद खराब हो गया है। इसके अलावा ध्यान रखें कि कच्चा शहद जिसे प्रोसेस नहीं किया जाता है वो समय बीतने पर क्रिस्टल में बदल जाता है। अगर वो क्रिस्टल हो जाता है, तो जार को गर्म पानी में डालें और तब तक उसमें रहने दें जब तक आपका शहद घुल नहीं जाए।

✍ संजय गोस्वामी

अन्य पदार्थों के रूप में प्रोटीन, वसा, एन्जाइम तथा वाष्पशील सुगंधित पदार्थ भी पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहते हैं। यही नहीं, शहद में विटामिन ए, विटामिन बी 1, बी-2, बी 3, बी5, बी 6, बी 12 तथा अल्प मात्रा में विटामिन सी, विटामिन एच और विटामिन 'के' भी विद्यमान रहते हैं। इसके अतिरिक्त शहद में लोह, फॉस्फोरस, कैल्शियम, आयोडीन भी पाये जाते हैं।

शहद को पूर्वपाच्य आहार भी कहते हैं क्योंकि इसमें कई प्रकार के एन्जाइम मधुमक्खियों के उदर से आते हैं, जिनमें से इनवर्टेज, एमाइलेज, ऑक्सीडेज प्रमुख हैं। ये एन्जाइम उत्प्रेरक के रूप में जीवों के अंदर होने वाली रासायनिक क्रियाओं में भाग लेते हैं। पुष्पों का मकरंद मधुमक्खियों के सिर में स्थिर ग्रंथियों से स्रावित एन्जाइमइनवर्टेज की मदद से ग्लूकोज में बदल जाती है। अतः शहद के सेवन के पश्चात् आंत के ऊपर का भाग इसे अवशोषित कर लेता है तथा यह तत्काल मस्तिष्क एवं मांसपेशियों तक जाकर ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है, जिसके कारण थकान दूर हो जाती है। शहद को घाव पर लगाने से घाव जल्दी भर जाता है, क्योंकि यह घाव में मौजूद अतिरिक्त जल को सोखकर संक्रमण से बचाव करता है। प्रातः काल शौच जाने से पूर्व शहद के साथ बराबर मात्रा में नींबू का रस मिलाकर गुनगुने जल के साथ सेवन करने से मोटापा घटता है, कब्ज दूर होता है तथा रक्त शुद्ध होता है।

शहद की शुद्धता की पहचान उसके रंग, गंध तथा स्वाद को क्रमशः देखकर, सूंघकर तथा खाकर की जा सकती है। असली और नकली शहद की जांच करने के लिए थोड़ा शहद लें और उसे अंगूठे और बीच की उंगली के बीच रगड़ें। कुछ समय बाद आप देखेंगे कि यह त्वचा में अवशोषित हो जाएगा और आपकी अंगुली को चिपचिपा महसूस नहीं कराएगा। दूसरी ओर, नकली शहद में अक्सर चीनी होती है, जिस वजह से इसे छूने पर यह बेहद चिपचिपा बन जाता है।

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला, 5 मई, 2021

पहाड़ी रामायण बरलाज होर राम कथा रे प्रसंग

भारतीय समाजो दे राम चन्द्र जी महापुरुष होर मर्यादापुरुष ही नईं मान्या जांदे, बल्कि भगवान ही मान्या जाओ। दुःख तकलीफा दे होर जिऊंदे-मरदे मुहों ते 'राम' शब्दही निकलो। त्रेता जुगो ते लई की आजो तईं इन्ना री कथा रामायणी रे रूपो दे बाल्मीकि ऋषिओ ते बाद भी सैकड़े विद्वाने आपणी-आपणी भाषा दे लिखी। बाल्मीकि रामायण मूल रामायणए। राम राजकुमारे बाल्मीकि जी रे आश्रमों दी रही की शिक्षा भी लई थी। इन्ना ते बाद रामकथा अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, रामचरित मानस होर भारती री सभी भाषा बोलिया दे लिखी गई। रामकथा परदेशा दे भी अजो तक सुणी-सुणाई जाओ। इण्डोनेशिया, कंबोडिया, जावा, सुमात्रा, फिजी, चीन, तिब्बत, लंका, मॉरीशस बगैरा दे रामकथा, रामलीला अज भी प्रचलित ए। कंबोडिया दे तो अंकोरवाट मंदिर अज भी एक वास्तुकला रा नमूना ए जो हजार वर्षा ते भी पुराणा ए।

भारतो री सभी भाषा दे संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश होर सभी प्रदेशा री बोलियां दे रामकथा रे प्रसंग लोकगीता, लोकगाथा, होर नाटका दे अज भी श्रद्धा होर विश्वासो दे लोक त्यौहार मनाई की याद करो ए। म्हारे हिमाचलो दे भी पहाड़ी लोक रामायण 'बरलाज' लोकगायन शैलीया दे नाटको रे रूपो दे दिवाली त्यौहारो रे दूजे दिने, शरदपूर्णिमा खे होर देवठनों खे रात भरी गाई की कथा रे रूपो दे दो-दो गवैये सुणाओ। लोक शरद रीता री राती अपणे देवतेया रे आंगणों दे अलाव जलाई की घेरे दी बैठी की सारी रात कथा शुणो होर देवो री पूजा ते बाद कथा सुणाया जाओ। राम कथा खे 'बरलाज' बोलो। बरलाजो रे दो अर्थ मान्यो जाओ। एक तो बली राजे री पूजा होर दूजा रामचन्द्र जी दशरथो रे 'वर' मिलणे ते तेतरी 'लाज' राखणे री प्रतिज्ञा जो रामचन्द्र जी पूरी किती थी। तिन्ने दशरथो रे बड़ो री होर मर्यादा री लाज राखी थी। बरलाज सारे हिमाचलो दे चलनो दे आए, पर खास करी की पुराणा महासू, शिमला, सिरमौर, सुकेत, सिरमौर, सोलन, बाघल, कुनिहार, भज्जी, बिलासपुर बगैरा दे खास करी की आज भी चलनो दे आए।

आज भी कई गांवां दे बरलाज अलग-अलग बोलिया दे गाणे री रिवाज ए। बाघली-बघाटी बोलिया दे बरलाज अर्की, पलोग, सैंज, धारड़, समोती, डुडाणा, कम्हारी, छमरोल, खजला, धामी, बाईचड़ी गांवा दे मनाणे खे लोक देवरेया दे इक्ट्ठे हो। बरलाज रामकथा दे सवनी ते पैहला ब्रह्म-विष्णुओ खे धरती बणाणे तईं 'साजना' दे स्तुति करेया जाओ-

'साजना' : भाइयो ना रे थिया देव रो दानवा। ना रे थिया पूजणे हार। / देव रो यो दानव, यो साजिया, साजिया यो वेद-बचार/ धरती रो यो अंबर, यो साजिया धूरा साजिया बे यो चार।

भाइयो ! नाओं बे लईयो वे नरायणे रा, जिन्ने धूरा पृथ्वी साजिया/ नाओं बे लईयो ब्रह्म विषणुओ, जिन्ने वेद बचारिया।''

दुनिया सजाणे ते बाद गवैये देवतेया बुलाओ, जेतखे 'शादणा' बोलो।

शादणा-बुलाणा :

''ओ पैहले आया रे देवा म्हारे कुरगणा, आसी गाणी बे रामो री रामायण।/ सच झूठ जाणो वे राम। आसा गाणे वे रामो रे बोल/ दूजे आया वे देव म्हारे धारा बालेया, आसा गाणी वे रामो री रामायण।/ आसे शादे रे ओखीया रे देव, सच झूठ जाणो वे रामा।''

होर सभी देवतेया बुलाणे ते बाद राम जन्म, दशरथ-श्रवण प्रसंग बगैरा पंचवटी प्रसंग गाया जाओ-

''देख, सिया पाणी भरने लगो। सुइनू डालिया ते आओ, सिया री गोदी बैठो।/ देख, सिया गोद समेटणे लगे। सुइनू उड्डी की डालिया बैठी जाओ।''/ देख, सुइनू या से मिरगो रा रूप करो। देख सिया छली जाओ।''

मारीच, सीता के छलो। तेतते बाद दशानन 'दशु' अलख जगाओ । सीता कारा त भीतरो ते चक्की की लेई जाओ।

''देख-दशु राजा था से जोगियो रा रूप धरो। दरो पांदे सिया खे अलक्ख जगाओ। / देख-दरो ते बाहर भिछा दे तो

लेख / अमर देव आंगिरस

आऊं, नईं तो आऊं न लऊं।..../ देख-दशु राजा था से सिया खे बांईं ते खिंजो। पंचव टीया रीया कशकिंदे लई जाओ।''

रावण जटायु खे घायल करी की सीता लंका लेई जाओ। तेबे हणुमान लंका दे जरई की अशोक वाटिका ज्वाड़ी दे ओ।

''बागे पहुंचेया हणुआ बड़ा चयमत करो। नौलखा पवनू सेना बाग ज्वाड़ने लाया धाराते देयो ग्वाल हाऊषा, बाग बांदरे ज्वाड़ेया। मेघनाथ दानुए एबे हाणु या थाम्या। सौमण ल्याओ रूइयां, सौ तेलो रा घड़ा, अंधे दानो लंकारे सईं काम कमाओ। लाई लंगूरो री फुंजटी दे आग, केसी रा मुंह झुलसा, मुण्डे मुंगर बाओ। फूकी वे देओ बोलो दानो री सभा...।

अशोक वाटिका ज्वाड़ने ते बाद अहिरावण होर हणुओ री लड़ाईया रा बड़ा अनोखा वर्णन मिलोए-

''भाइयो : चली आया दानो बे प्यालो रा, बेड़े राणी सुपणा रे आओ/ दानो बालो राणीओ सुपणा हणुमान युद्धो के शादो।/ खेलो चार बाजिया यो चौपड़ा, खेलीऊंगे पिछले ध्याड़ेरा/ बणाई वे देया झींझण रसोइया, खाई लऊंगे वे पिछले ध्याड़े रा।/ ब्याओ रे जे देयां मेरे कपड़े, शीरो री देया गीजा पगड़ी।/ काना रे जो देया बरागरा, गलो रे देया बे तन्दीरा।

भाइयो : बाहीं रे जो देया सलांगणा, श्यामीकरण घोड़ले ल्याओ/ हात्थो री जो देया बरछीया, काठी मेरी सुंइने री ल्याओ।''

मेघनाथ लछमणो रे युद्धो रे बोला दे लोक रोणे लगी जाओ। ''और देख ! बाण लछमण मेघनाथो खे बाओ। मेघनाथो खे मारी देओ।

शिर धड़ा ते अलग करी देओ। शिरो रामा रे डेटे ल्याओ। मेघनाथो रा सिर सलोचनावलाय करो, सलोचना सती हुई जाओ।''

अन्तो ते ढोल-नगाड़ेया रे तालो दे राम-रावण जुद्ध हो-

''भाइयो ! भाइया रे मेरे विभीषणा, कुछ भेद देया रे दशुए रा/ जेत भेदे मरो राजा दशु, तो ताखे राज लंका रा देऊं।

''भाइयो ! सात डिबरे बे यो शिंबलो रा जेदे रामा लोहे रा पिंजरा पिंजरे दे होश बे दशुए रा, पिंजरा ही तोड़ेया वे नारायण/ नाभीया दे दांये अमृत कण्डुआ, बाण रामा नाभीया दे बाया।

भाइयो ! तीर्कबाणबाया वे नरायणे बीह भुजा दशुए रे बाढ़ेवे नारायणे, दंश शीश उशुए रे बाड्डे।

एक बाण बाया बे नारायणे, तोड़ी दित्या अमृत कण्डुआ
मारी दित्या लंका रा दशुआ, लंका फिरो राम वे दुहाइया।

विभीषणे खे राज-पाट देणे ते बाद 'बोल' गाई की देवतेया री स्थापना आपणे-आपणे देवरेया खे वापस जाणे खे गाया जाओ- ''भाइयो ! धूरा रे शादे यो देवते, चऊं बे धूरा खे आपणीया जाओ।/ रामे शादे थे वाहे बे वाहे री, तूसा देवतेया बिसरी रो जाणा/ आसे गइया रामो री रामायणा, सच झूठ जाणो बे नरायणा।/ जेती गाइया रामो री रामायणा, तेती देओ पूतो री बधाइया जुग-जुग जीए देवा मंठेड़ा, सदा फूले सुइने रे फूले। राम नारायणे शादे थे औखीयारे, करी गए रामो रा पखाला।/ जुग-जुग जीओ रमायणी शुणने वालेयो, सदा फूले सुइने रे फूले।

पहाड़ी लोक साहित्योदे रामकथा बरलाज नाटको रा बड़ा स्थान ए। बाधली-धम्याणी बोलिया रा बरलाज बहुत इलाकेया दे गाया जाओ, एत रे कई रूप कई बोलिया दे मशहूर ए। राम कथा रे सारे ही प्रसंग 'साजना' 'राम जन्म', पंचवटी, हनुमान कली, अशोक वाटिका, 'गरुड़ छाया'', लछमण मेघनाथ जुद्ध, राम रावण युद्ध, होर देवतेया रा प्रस्थान-'बोल', छोड़का, 'स्थान' सायर, बगैरा रे शीर्षका दे बड़े सोणे तरीके दे गाइ जाओ। बीचे-बीचे रामचन्द्र जी रे भजन भी गाया जाओ। धामी होर पेऊठा-अर्की-बाईचड़ी रीया बरलाजो री मूल कथा ते पता चलो भई सवनी ते पैहला 160-70 साल पैहले मायली गांवा रे पं. गुरुचरण जी ये शुरू कित्ता था। तेतते बाद पं. धूमी राम, सुदामा राम, पं. शंकर लाल होर आजकाली प्योठा गांवों रे पं. प्रेम चन्द जी ये परम्परा जिऊंदी राखी।

कबता

रफतार

मदन हिमाचली

नशे री आदत बुरी हो,
क्यों करो तुम्मे खाना खराब।
भलखी व्याले दूध घीऊ खाओ,
न करी अपणा खाणा खराब।

चिट्टा भांग, धतूरा छाडेरो,
नशे दे करो तुम्में सबे परहैज।
नशैड़ी आग्गे कोई नी टिकया,
केतणा ही करो चाहे बंध बन्देज।

नौजवान म्हारे देशा री दौलत,
मत करो तुम्मे जीउंणा खराब।
आधी उमरे पोरे मरे जे,
केई देणा त्यारे आपणा हसाब।

नशे री आदत, मौती खे दावत,
अबे बी सुधरने रा मौका न छड्डो।
अक्कली साई जे हेरले कामो,
तो भगवान भी तुमाखे कभी न छाड्डो।

जीउंणा आपणा सुधारी लो सब्बे,
बुरी आदता खे जिउणा दे काड्डो।
संजीवणी नी ए नशे री आदत,
नी खे आपणे जिउवा दे काड्डो।

नशा मुक्त आपणा देश बणाओ,
अबादी री रोको शीघी रफतार।
देशो री संपदा आपणी म्हारी,
न करो एनी चोड़ी रो बेकार।

पहाड़ी लोक कहावतां

ढाई पकौड़ी छाबडी,
फलसा तक राग ।

आव डडा-मेरा पेट बडा।
नॉव बडा- गराँब उजड़।

कामा रा न काजा रा,
ढाई मण अनाजा रा।

गधे जो दिता लुण,
जस न गुण।

जो पैंडा हांडणा नीहां,
से घोखणा नीहां।

खीली जीमांया,
होर कवारी बेटीया
जो आवें सौ रबारे।

साधा क्या सवाद,
जेहड़ा गोबर, तेहड़ा परसाद।

गोह बुझाही,
जे हाऊँ केडी कर बांकी
पर हुआँही से काली।

घरा रा जोगी-जोगडा,
बाहरा रा जोगी सिध।

काची गणका रे सौ
पकवान हुआंहे।

पार लीये बलाईये,
माह मंझा आईये।

खींथडूवा मंझ हुंआहे,
लाल छूपी रे।

उखला दिता सिर,
ता घावा ले नी डरना।

जीयुन्दे जो नी तेल,
मरी रे जो तलोये।

इने माहणुए घाटा-घाटा रा
पाणी पीती रा,
एस कने मुंह नी लाणा।

जिन्हा जे घरा रे चलन चलाणे,
तिन्हा खोल पुरादूंवारे बनण पाणे।

✡ **चूड़ामणी बड़पग्गा**

किस्मता दा खेल

निक्की कथा/ डॉ. युगल किशोर डोगरा

गल्ल बड़ी पराणी ऐ। इक्क पैसे वाला सेठ था। तिस वाह्ल बड़ी धन-दौलत थी। पैसे दी कोई कमी नी थी। तिसदी इकलौती कुड़ी थी। जाह्लू सैह् ब्याहणे जोगी होई तां तिन्नी खरे मुंडुए तोपणे वास्ते जगह-जगह पंडत दुड़ाए। कुण नी चांहदा जे म्हारी कुड़ी -बिट्टी खरिया जगह न ब्योहे ? तिसा जो खरा मुंडु न मिले ? आखरकार पंडता खूब सोची समझी करी इक्क टिपड़ा ल्योंदा। 26 गुण मिले। ब्याह बड़िया धूमा कने होया। मुंडुए वाला परिवार वी मनया परिवार था। खानदानी लोक थे। पर बोलदे ' रूप बैठी झूरे, किस्मत बैठी खाए', कुड़िया दा रूप तां बड़ा सुन्दर था पर किस्मत खरी नी थी। जेहड़ा सोचया था सैह् नी होया।

सैह् मुंडु शराबी था कने जुआरी वी। छुट भलेईया सारे ई गुण थे। बोलदे खाई-खाई करी पेड़ू खाली होई जांदे। हौलें हौलें सारा धन खत्म होई गिया। बिटिया दी एह हालत दिखी करी सेठाणी वी बड़ी दुखी थी। इक दिन तिन्ना सेठे जो बोलया-''तुसां सारेयां दी मदद करदे, अपणिया बिटिया पास्सें वी कुछ सोचा, बचारी कितणी परेशान ऐ ?''

सेठे बड़ी सोची-समझी करी जवाब दिता -''जाहलू तिस्सा दी किस्मत चमकगी ताहलू आपणे आप सब ठीक होई जाणा, फजूल चिन्ता नी करनी''। इक दिन सैठ अपणे कामे काजे वास्ते कुथी बाहर गिया था। पिछे ते तिन्हां दा जुआई आईगिया।

सस्सू बड़ी आदर खातर किती। लड्डुआं लेई करी अपणे घरे पास्सें चली पेया। हाली थोड़ी दूर ई गिया था कि तिन्नी सोचया इतणा भार मैं लड्डुआं दा कजो चुकक्कां, कैह् ना मैं इन्हा जो एत्थु इसा हटिया जो बेची दिआं, इस लटोटरे कुतांह लेई जां, एह सोची करी तिन्नी सैह् लड्डू दूकानदारे जो बेची दित्ते कनें पैसे खीस्से पाए। थोड़िया देरी जुआई कदेया वी होए, सैह् पूजणे वाला हुंदा। तिस्सा दे मने च बचार आया, कैंह न कुसी तरीकें इस दी मदद करां। यह सोची करी तिलां लड्डुआं च सुन्ने दियां अशरफियां पाई दितीयां कने सैह् लड्डू जुआइंए जो देई दित्ते।

भला घर आया जुआई खाली हत्थें कींया भेजणा ? लड्डू वी घट नी थे, पूरे पंज किलो थे। हुण जुआई तिन्हां बाद सैहई सेठ वापस घरे जो औआ था करदा, तिन्नी सोचया घरें खाली हत्थें कजो जाणा, कैह् ना कोई मिठाई दूकानां ते लेई लयां। सेठ तिसा ई दूकाना पुज्ज कने लड्डू खारीदे। दूकानदारे सैहई लड्डुआं दा लफाफा सेठे जो थमाई दित्ता।

घरे आई करी सेठे सैह् लफाफा खोलया, खाणे जो लड्डू तोड़या तां तिस बिच सोने दी अशरफी दिखी करी, तिसा दी हवा ही निकली गेई, बोले तां क्या बोलैं एह् तां सैहई अशरफियां हन। वाह री किस्मत। सोचया था तिन्हां दी कोई मदद करां। सेठानिया सारी कहाणी सेठे जो सुणाई जे जुआई आयो थे कने मैं चुपचाप लड्डुआं बिच अशरफियां छुपाई दित्तीया थियां, जे जाहलू सैह् लड्डू खाणे वास्ते तोड़गे तां तिन्हां अशरफियां कड्डी लेंगे कने घरे दी हालत सुधरेगी। सेठ बोलया- ''हाली तिन्ना दी किस्मत सुनियो ए, जाह्लू जागगी तां अपणे आप सब ठीक होई जाणा। इस वक्त तां सैह् जित्थू बी हत्थ पांगे, चिक्क ई हत्थें आउणी। इस वास्ते जितणा भगवान दै, तिस बिच ई संतोष करना चाहिदा। जीवने च सुख नी औणा कने दुख वी औणा, धुप्प वी औणी कने छौ वी औणी, दिन वी औणा कने रात वी औणी, एह जीवने दा दस्तूर ऐ। जेहड़ा इसा फिलासफिया समझी लै सैह् सुखी। इस वास्ते बोलदे जे किस्मता ते जादा कने समय ते पहलें कुछ नी मिलदा।'' बचारी सेठानी सिरे हत्थ देई करी नफहोंई पेई गेई।

राष्ट्रीय पंचायती दिवस के अवसर पर प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित वचुर्अल कार्यक्रम में भाग लेते हुए मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर

कोरोना वैक्सीन की पहली व दूसरी खुराक के मध्य अंतर कम करने के लिए प्रभावशाली प्रणाली विकसित करने के निर्देश

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला जिले में कोविड-19 स्थिति की समीक्षा करते हुए जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग को बिस्तरों की क्षमता बढ़ाने के निर्देश दिए ताकि जिले में कोविड-19 मामलों में तेजी से वृद्धि होने की स्थिति में मरीजों के लिए बिस्तरों की कमी न आए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बाहरी राज्यों से जिले में आने वाले सभी लोग ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से सम्बन्धित अधिकारियों को इसकी जानकारी दें। जैसे ही कोई व्यक्ति बाहरी राज्यों से प्रदेश में आता है, तो इसकी जानकारी सम्बन्धित क्षेत्रों के आशा कार्यकर्ताओं और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं से भी साझा करे ताकि होम क्वारंटीन नियमों का प्रभावशाली तरीके से पालन किया जा सके। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि जिले में बिस्तरों की क्षमता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि आईजीएमसी की नई ओपीडी में चरणबद्ध तरीके से 300 अतिरिक्त बिस्तरों की क्षमता का निर्माण किया जाएगा। आयुर्वेदिक अस्पताल छोटा शिमला में 50 अतिरिक्त बिस्तरों, नागरिक अस्पताल जुन्गा में 50 अतिरिक्त बिस्तरों व टुटीकण्डी पार्किंग में 100 बिस्तरों की अतिरिक्त क्षमता उपलब्ध करवाई जाएगी। रोहड़ू, रामपुर बुशैहर के खनेरी और ठियोग नागरिक अस्पतालों में बिस्तरों को क्षमता को बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी विपरीत स्थिति का सामना करने के लिए शिमला शहर या निकटवर्ती स्थान पर प्री फेबरिकेटिड 200 बिस्तरों की अतिरिक्त सुविधा उपलब्ध करवाने के भी प्रयास किए जाए। उन्होंने कहा कि सेना के अधिकारियों से शिमला में सेना अस्पताल के उपयोग की अनुमति से सम्बन्धित मामला उठाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना वैक्सीन की पहली और दूसरी खुराक के मध्य अन्तर को कम करने के लिए प्रभावशाली प्रणाली विकसित की जानी चाहिए। विशेष रूप से स्वास्थ्य और अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं को मिलने वाली दूसरी खुराक के लिए विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि साधारण जनता को स्वेच्छा से टीकाकरण और कोविड-19 से बचाव के लिए दिशा-निर्देशों का पालन करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि लोगों को सादे विवाह आयोजनों के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। विवाह आयोजनों के लिए स्वीकृति प्रदान करते समय आयोजन के समय का भी निर्धारण किया जाना चाहिए ताकि कार्यक्रम पूरे दिन न चले। स्थानीय निर्वाचित संस्थाओं को प्रदेश सरकार द्वारा जारी मानक संचालन प्रक्रियाओं और दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित करना चाहिए। बाहरी राज्यों से आने वाले लोगों को होम क्वारंटीन में रखना और कोविड-19 जांच करवाना सुनिश्चित करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश में ऑक्सीजन, उपकरणों और दवाओं की कोई कमी नहीं है। प्रदेश सरकार रोहड़ू और रामपुर के अस्पतालों में ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित करने पर विचार कर रही है ताकि क्षेत्र के लोगों को सुविधा मिल सके। उन्होंने कहा कि निगरानी और होम आइसोलेशन प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को बाहरी राज्यों से आने वाले लोगों पर निगरानी रखनी चाहिए और उन्हें होम आइसोलेशन और आरटीपीसीटी टेस्ट के लिए प्रेरित करना चाहिए। शहरी विकास मंत्री सुरेश भारद्वाज ने शिमला जिला में कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने जिले में टीकाकरण केन्द्रों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि अस्पतालों में भीड़ को कम किया जा सके। उन्होंने मुख्यमंत्री से रोहड़ू और रामपुर के अस्पतालों के लिए नए गैस प्लांट स्वीकृत करने का भी आग्रह किया। उपायुक्त आदित्य नेगी ने जानकारी दी कि जिले में सक्रिय मामलों की कुल संख्या 1648 है और रिकवरी दर 86.1 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि 26 अप्रैल तक जिले में कोविड के 165029 सैंपल लिए गए। उन्होंने शिमला जिले में बेमौसमी बर्फबारी, बारिश और ओलावृष्टि के कारण फसलों को हुए नुकसान पर एक प्रस्तुति भी दी। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव सैजल, महापौर सत्या कौंडल, उप महापौर शैलेंद्र चौहान, स्वास्थ्य सचिव अमिताभ अवस्थी इत्यादि ने वर्चुअल माध्यम से बैठक में हिस्सा लिया।

कोविड रोगियों के लिए बिस्तर क्षमता 5000 तक बढ़ाने का निर्णय

(पृष्ठ एक का शेष) अधिकारियों को ऑक्सीजनयुक्त बिस्तरों की आपूर्ति सुनिश्चित करने और चिकित्सा महाविद्यालय नेरचौक में अधिकतम बिस्तरों में ऑक्सीजन सुविधा उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि रत्ती के अस्पताल में बिस्तरों की क्षमता को 25 से बढ़ाकर 50 किया जाना चाहिए।

श्री जय राम ठाकुर ने अधिकारियों को जिले की सभी संस्थाओं/भवनों को सूचीबद्ध करने के निर्देश दिए। कोविड-19 मरीजों की संख्या में वृद्धि होने पर इनका उपयोग मरीजों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बिलासपुर और हमीरपुर जिलों में स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं को सुदृढ़ करने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि चिकित्सा महाविद्यालय नेरचौक पर मरीजों के बोझ को कम किया जा सके। उन्होंने अधिकारियों को इस महामारी से प्रभावशाली तरीके से निपटने के लिए आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के भी निर्देश दिए।

इसके उपरान्त मुख्यमंत्री ने मंडी जिले के भंगरोटू में निर्माणाधीन प्री-फैब्रिकेटिड अस्पताल का भी निरीक्षण किया।

श्री जय राम ठाकुर ने मण्डी में मातृ शिशु स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र का दौरा किया और सम्बन्धित अधिकारियों को इसका निर्माण कार्य शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने खलियारा में राधास्वामी सत्संग व्यास का भी दौरा किया, जहां आवश्यकता पड़ने पर 200 बिस्तरों वाले प्री-फैब्रिकेटिड ढांचे का निर्माण किया जाएगा।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव सैजल, विधायक राकेश जम्वाल, इंद्र सिंह गांधी, जवाहर ठाकुर, भाजपा प्रवक्ता अजय राणा, उपायुक्त मंडी ऋग्वेद ठाकुर, पुलिस अधीक्षक शालिनी अग्निहोत्री, मुख्य चिकित्सा अधिकारी देवेंद्र शर्मा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री की पुरस्कृत पंचायतों को बधाई

(पृष्ठ एक का शेष)वित्तीय स्थिरता लाना है। राज्यों के पंचायती राज विभाग परियोजना के काम के बारे में ग्रामीणों को संवेदनशील बनाने और प्रचार-प्रसार आदि के लिए राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए) निधि का लाभ उठाने के लिए सहयोग प्रदान करेंगे। ग्राम पंचायतें राज्य पंचायती राज विभाग और राज्य राजस्व विभाग को सर्वेक्षण कार्य समय पर पूरा करने में मदद करेंगी और सर्वेक्षण के बारे में गांव के लोगों में जागरूकता पैदा करेंगी। केंद्रीय पंचायती राज मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर और अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी इस कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल हुए।

अतिरिक्त मुख्य सचिव राजस्व आर.डी. धीमान, अतिरिक्त मुख्य सचिव लोक निर्माण विभाग जे.सी. शर्मा, सचिव ग्रामीण विकास और पंचायती राज डॉ. संदीप भटनागर, निदेशक ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज ललित जैन मुख्यमंत्री के साथ शिमला में उपस्थित थे।

कोविड-19 प्रबंधन के लिए चार कमेटियां गठित

(पृष्ठ एक का शेष) सिलेण्डर की आपूर्ति, सभी संबंधित अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सभी सात स्थानों पर पीएसए प्लांट कार्यशील करने के साथ प्रदेश के उपायुक्तों/मुख्य चिकित्सा अधिकारियों/ चिकित्सा अधीक्षकों के साथ डीसीएचएस, डीसीएचसी, डीसीसीसी स्तर पर अतिरिक्त बिस्तरों की क्षमता उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी निभाएगी।

कोविड-19 मरीज/एम्बुलेंस प्रबंधन कमेटी में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के एसएसओ डॉ. राजेश ठाकुर को समन्वयक, आईजीएमसी के डॉ. मलय सरकार, डॉ. संजय महाजन व डी.डी.एच.एस. के डॉ. पदम नेगी को सदस्य बनाया गया है। यह कमेटी डीसीएच/डीसीएचसी इत्यादि में सभी सुविधाएं, जिला स्तर पर मरीजों को संबंधित अस्पतालों में ले जाने के लिए जिले की टीमों को निर्देश देने के साथ कोविड अस्पतालों में कोविड संबंधित आवश्यक दवाओं जैसे रेमिडिसिवीर की आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। वहीं, कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) समन्वय कमेटी में शहरी विकास निदेशक आबिद हुसैन को समन्वयक, निदेशक स्वास्थ्य सेवाएं के अतिरिक्त निदेशक सुमित खिमटा, स्वास्थ्य निदेशालय के डॉ. रमेश चन्द को सदस्य बनाया गया है। यह कमेटी औद्योगिक घरानों से कोविड-19 एसडीआरएफ फंड के लिए सभी संभावित दानकर्ताओं से अंशदान दिलाने का प्रयास करेगी। कमेटी प्रदेश के कोविड अस्पतालों में संसाधनों के मध्य दूरी को कम करके कोविड-19 अस्पतालों में इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करेगी।

यह कमेटी अंशदान में मिली सामग्री विभिन्न अस्पतालों तक पहुंचाना सुनिश्चित करेगी। मीडिया/आईईसी कमेटी में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन हिमाचल प्रदेश के मिशन निदेशक डॉ. निपुण जिंदल को समन्वयक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के उप प्रबंध निदेशक डॉ. गोपाल बेरी, एसपीओ डॉ. अंजली चौहान और निदेशालय सूचना एवं जन सम्पर्क के सहायक लोक सम्पर्क अधिकारी संजय सैनी को सदस्य बनाया गया है। यह कमेटी समयबद्ध डाटा एकत्रित करके मीडिया तक सही सूचना पहुंचाना और सभी स्तरों पर जानकारी के अभाव को खत्म करने के साथ नियमित रूप से मीडिया को जानकारी उपलब्ध करवाएगी।

पंचायतों के काम-काज पर केन्द्र सरकार की मोहर

(पृष्ठ एक का शेष) प्रशासनिक कार्यों में दक्षता एवं गुणवत्ता लाने के लिए राज्य में आरंभ की गई ई- गवर्नेंस मुहिम के परिणास्वरूप प्रदेश की पंचायतें इस सम्मान को पाने में सफल हो पाई हैं। हिमाचल प्रदेश के लिए यह बड़े गर्व की बात है और साथ ही बड़ी उपलब्धि भी है। इस सबका श्रेय प्रदेश के दूरदर्शी मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर को जाता है जिनके मार्गदर्शन में सुशासन के लिए पंचायतों में जो मॉडल अपनाया गया है उसे देश भर में सराहना मिली है। हिमाचल प्रदेश में सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतर तरीके से उपयोग किया जा रहा है। सरकार सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पंचायतों के कामकाज में कुशलता, पारदर्शिता तथा दक्षता लाने के प्रयास कर रही है। ई-पंचायत के माध्यम से प्रदेश में जन्म मृत्यु पंजीकरण सहित आय व्यय का लेखा-जोखा आदि सुविधाओं को ऑनलाइन किया गया है। प्रदेश में नव गठित 412 पंचायतों को छोड़ कर सभी पंचायतों को इंटरनेट के साथ जोड़ा जाएगा। शेष पंचायतों को भी शीघ्र ही इंटरनेट सुविधा के साथ जोड़ा जाएगा। जन्म व मृत्यु पंजीकरण को लोक सेवा गारंटी अधिनियम के दायरे में रखा गया है। इसमें निर्धारित अवधि के भीतर सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। यही नहीं मनरेगा के तहत होने वाले कार्यों को भी ऑनलाइन श्रेणी में शामिल किया गया है। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने पंचायती राज विभाग को ई-पंचायत के लिए राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान हासिल करने के लिए बधाई दी। उनका कहना है कि प्रदेश सरकार पंचायतों को और सुदृढ़ करने के लिए प्रयासरत है और 15वें वित्तायोग ने पंचायतों को विकास कार्यों के लिए 1600 करोड़ रूपये स्वीकृत किए हैं और करीब200 करोड़ रूपये की राशि पंचायतों को जारी भी कर दी गई है। ई-गवर्नेंस प्रणाली के प्रभावी कार्यान्वयन का ही नतीजा है कि इससे प्रदेश सरकार को सारे आँकड़े आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। जिससे सरकारों को विभिन्न योजनाएं और नीतियां बनाने के लिए मदद मिलती है। इसके परिणामस्वरूप एक कॉमन डाटा तैयार हो जाता है जिसका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिये किया जा सकता है। इससे जनता और सरकार के बीच स्वस्थ एवं पारदर्शी संवाद को मजबूत बनाया जा सकता है। ई-गवर्नेंस का सुशासन, भ्रष्टाचार रोकने एवं लोक सेवाओं को आम नागरिकों तक आसानी से पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

सामुदायिक भोज पर रहेगा पूर्ण प्रतिबंध

(पृष्ठ एक का शेष) पर मरीजों को संबंधित अस्पतालों में पहुंचाना सुनिश्चित करेगी। कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) समन्वय कमेटी में शहरी विकास निदेशक आबिद हुसैन औद्योगिक घरानों से कोविड-19 एसडीआरएफ फंड के लिए सभी संभावित दानकर्ताओं से अंशदान दिलाने का प्रयास करेंगे। मीडिया/आइईसी कमेटी में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन हिमाचल प्रदेश के मिशन निदेशक डॉ. निपुण जिंदल समयबद्ध डेटा एकत्रित करके मीडिया तक सही सूचना पहुंचाने और सभी स्तरों पर जानकारी के अभाव को खत्म करने के साथ नियमित रूप से मीडिया को जानकारी उपलब्ध करवाएंगे। श्री जय राम ठाकुर ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री से 5000 डी-टाइप ऑक्सीजन सिलेंडर और 3000 बी-टाइप ऑक्सीजन सिलेंडर प्रदान करने का आग्रह किया ताकि राज्य में ऑक्सीजन की कोई कमी न हो।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव सैजल, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार त्रिलोक जम्वाल, मुख्य सचिव अनिल खाची, अतिरिक्त मुख्य सचिव आर.डी. धीमान और जे.सी. शर्मा, स्वास्थ्य सचिव अमिताभ अवस्थी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में शामिल हुए।

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2021-2023 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

कोविड लड़ाई में पूर्व सैनिकों की सेवाएं ले हिमाचल

केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने गत दिनों राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय से दूरभाष पर बातचीत कर कोविड-19 को लेकर राज्य की स्थिति और सुविधाओं को लेकर चर्चा की। उन्होंने राज्यपाल से कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ाई में राज्य के पूर्व सैनिकों को शामिल करने और सैन्य व्यवस्था का लाभ लेने का सुझाव दिया। रक्षा मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक हैं और यहां कई प्रकार से सैनिक व्यवस्था भी उपलब्ध है। यह दौर महामारी का है। इसलिए, इस दौरान राज्य को अपने पूर्व सैनिकों की सेवाएं कोरोना के खिलाफ लड़ाई में लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सैनिक गेस्ट हाउस, रेस्ट हाउस व अन्य मेडिकल सुविधाओं का भी लाभ लिया जा सकता है।

श्री सिंह ने महामारी के खिलाफ प्रदेश स्तर पर किए जा रहे विभिन्न प्रयासों पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि मिलकर इस चुनौती का सामना किया जा सकता है। मुश्किल की इस घड़ी में हमें अपने स्तर पर योगदान देना चाहिए।

रक्षा मंत्री ने राज्यपाल से कोविड-19 को लेकर की चर्चा

राज्यपाल ने केंद्रीय रक्षा मंत्री द्वारा हिमाचल के प्रति व्यक्त उनकी चिंता पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश में कोरोना महामारी के खिलाफ मिलकर लड़ाई लड़ी जा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में पूर्व सैनिकों और सैन्य व्यवस्था के नेटवर्क इस दिशा में पहले से ही क्रियाशील है, जिसका लाभ और प्रभावी तरीके से लिया जाएगा ताकि इस लड़ाई में विजय हासिल की जा सके। उन्होंने केंद्रीय मंत्री को आश्वस्त किया कि उनके सुझावों पर कार्य योजना बनाकर महामारी के खिलाफ क्षेत्रीय स्तर पर पूर्व सैनिकों की अधिक से अधिक सेवाओं को लेकर मजबूती से काम किया जाएगा। उन्होंने केंद्रीय मंत्री की राज्य के प्रति संवेदनशीलता के लिए आभार व्यक्त किया।

आगजनी प्रभावित परिवारों को भेजी राहत सामग्री

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने जिला शिमला के कोटखाई क्षेत्र के अंतर्गत रामनगर पंचायत के फनैल गांव में आग की घटना पर दुःख व्यक्त किया है जिसमें एक महिला की मृत्यु हो गई और लगभग छह परिवार प्रभावित हुए हैं। राज्यपाल जो राज्य रेडक्रास के अध्यक्ष भी हैं, ने फौरी राहत के तौर पर प्रभावित परिवारों को राज्य रेडक्रॉस की ओर से कंबल, तिरपाल, किचन सैट और सैनिटेशन किट्स आदि भेजे हैं। उन्होंने जिला प्रशासन को प्रभावित परिवारों को हर संभव सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए।

उचित मूल्य की दुकानों की समय सारणी जारी

खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामले विभाग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में बताया कि हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों में जनहित के दृष्टिगत लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत उचित मूल्यों की दुकानों को खोलने और बन्द करने की समय सारणी जारी की जा चुकी है। उन्होंने बताया कि उचित मूल्यों की दुकानें प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तथा दोपहर 2:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक खुली रहेंगी। दोपहर के भोजन का समय 1:00 बजे 2:00 बजे तक होगा। ग्रीष्मकाल में रविवार को कार्य समय प्रातः 9:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और सर्दियों में प्रातः 9:30 बजे से सायं 6:00 बजे तक होगा। उचित मूल्यों की दुकानें हर सोमवार को बन्द रहेंगी तथा दुकान धारक को दुकान परिसर में यह समय सारणी नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित करनी होगी।

परौर में एक हजार बिस्तरों की क्षमता का अस्थायी अस्पताल क्रियाशील बनाने के प्रयास : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जिला कांगड़ा के धर्मशाला में कोविड-19 की समीक्षा बैठक करते हुए।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों धर्मशाला में जिला कांगड़ा में कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि राधास्वामी परिसर, परौर को हजार बिस्तरों तक की क्षमता वाले अस्थायी अस्पताल में परिवर्तित कर इसे क्रियाशील बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में इस वायरस के प्रसार को रोकने के लिए पर्याप्त मात्रा में पीपीई किट्स, फेस मास्क, सैनिटाइजर और आवश्यक दवाइयां उपलब्ध हैं। इसके अलावा, प्रदेश में ऑक्सीजन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

प्रदेश सरकार का प्रमुख उद्देश्य राज्य में किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए कोविड-19 मरीजों के लिए बिस्तरों की क्षमता में वृद्धि करना है। उन्होंने कहा कि गग्गल में 50 बिस्तरों वाले सिटी सेंटर मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल को शीघ्र कोविड-19 रोगियों के लिए क्रियाशील बना दिया जाएगा।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में कोविड मामलों में तीव्र वृद्धि के दृष्टिगत सरकार ने राज्य के चार सीमावर्ती जिलों में रात्रि 10 बजे से प्रातः 5 बजे तक कोरोना कर्फ्यू लगाने का निर्णय लिया है। बाहर से प्रदेश में प्रवेश करने वाले लोगों से 72 घण्टे पहले किए गए आरटीपीसीआर परीक्षण की रिर्पोट साथ लाने और 14 दिनों की अवधि के लिए अपने निवास स्थान पर होम आइसोलेशन में रहने को कहा गया है। उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों से बाहरी राज्यों से आने वाले लोगों की निगरानी करने का आग्रह किया।

गग्गल में शुरू हुआ 50 बिस्तरों वाला मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल

मुख्यमंत्री ने कहा कि डाक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ को भी मरीजों और होम आइसोलेशन में रह रहे उनके परिजनों को इस वायरस से बचाव के तरीकों के बारे में जागरूक करना चाहिए। डाक्टरों को होम आइसोलेशन रोगियों के स्वास्थ्य मापदण्डों की नियमित निगरानी सुनिश्चित करनी चाहिए। उन्होंने लोगों से राज्य सरकार द्वारा विवाह समारोह और अन्य सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए जारी की गई मानक संचालन प्रक्रियाओं का कड़ाई से पालन करने का आग्रह किया।

इसके उपरान्त, मुख्यमंत्री ने डा. राजीव गांधी राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेदिक महाविद्यालय पपरोला का भी दौरा किया। उन्होंने कहा कि इस आयुर्वेदिक महाविद्यालय के नवनिर्मित भवन में कोविड-19 रोगियों के लिए अतिरिक्त 50 बिस्तरों की सुविधा सृजित की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस अस्पताल में बिस्तरों की क्षमता 100 तक बढ़ाई जाए।

हिमाचल प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष विपिन सिंह परमार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री सरवीण चौधरी, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव सैजल, सांसद किशन कपूर, स्वास्थ्य सचिव अमिताभ अवस्थी, उपायुक्त कांगड़ा राकेश प्रजापति और पुलिस अधीक्षक विमुक्त रंजन भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री अन्न योजना से 28.64 लाख उपभोक्ता लाभान्वित

खाद्य, नागरिक एवं उपभोक्ता मामले मंत्री श्री राजिन्द्र गर्ग ने गत दिनों शिमला में बताया कि प्रदेश सरकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के अन्तर्गत चयनित अन्त्योदय अन्न योजना परिवार तथा प्राथमिक गृहस्थियां जिनमें बीपीएल, अन्नपूर्णा, एकल नारी, तिब्तियन परिवार शामिल है, को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अन्तर्गत मई व जून, 2021 के लिए पांच किलोग्राम खाद्यान्न प्रति लाभार्थी (तीन कि.ग्रा. गंदम व दो कि.ग्रा. चावल) निःशुल्क वितरित करेगी।

श्री राजिन्द्र गर्ग ने बताया कि प्रदेश को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अन्तर्गत कुल 16822.950 मीट्रिक टन गंदम व 11821.610 मीट्रिक टन चावल का आवंटन प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 28.64 लाख राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम उपभोक्ता इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित होंगे।

15 दिनों के भीतर भेजें फसलों व फलों को हुए नुकसान की रिपोर्ट

बेमौसमी बर्फबारी, ओलावृष्टि और भारी बारिश के कारण फसलों और फलों को हुए नुकसान की समीक्षा के लिए बागबानी मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने गत दिनों शिमला में बागबानी अधिकारियों, फसल बीमा कंपनियों और फल उत्पादक संघ की बैठक की अध्यक्षता करते हुए सेब व अन्य फसलों को पहुंचे नुकसान के आंकलन के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि शिमला सहित किन्नौर, मंडी, कुल्लू, चंबा, लाहौल-स्पीति तथा सिरमौर जिलों के उद्यान उप-निदेशकों की अध्यक्षता में कमेटियों का गठन किया जाए। इन कमेटियों में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, राजस्व विभाग के अधिकारियों, बागबानों और बीमा कंपनियों के प्रतिनिधियों को भी सम्मिलित किया जाए। बागबानी मंत्री ने निर्देश दिए कि प्रदेश सरकार को नुकसान के आंकलन की वीडियोग्राफी सहित विस्तृत रिर्पोट 15 दिनों के भीतर भेजी जाए।

बागबानी मंत्री ने निर्देश दिए कि संबंधित क्षेत्रों के उपमण्डलाधिकारी इस कार्य की दैनिक समीक्षा रिपोर्ट भी बागबानी मंत्री के कार्यालय में भेजे। उन्होंने कहा कि उद्यान विभाग ने प्रदेश के बागबानों को पौध संरक्षण दवाइयों के अनुदान को सीधे किसानों व बागबानों के बैंक खातों में वितरित करने का निर्णय लिया है।

श्री महेंद्र सिंह ठाकुर ने कहा कि दवाइयों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कीटनाशक अधिनियम 1968 के अनुसार, विभागीय अधिकारियों द्वारा नमूने कृषि विभाग की शिमला के बालूगंज स्थित प्रयोगशाला में जांच के लिए भेजे जाते हैं। ओला अवरोधक जालियों को लगाने के लिए सरकार द्वारा वर्ष 2020-21 कृषि उत्पाद संरक्षण (एन्टी हेलनेट) योजना कुशी (केयूएसएचवाई) चलाई जा रही है, जिसमें स्टील की स्थाई संरचना के निर्माण पर बागबानों को 50 प्रतिशत अनुदान का प्रावधान किया गया है। इस वर्ष कुशी योजना के अन्तर्गत 20 करोड धनराशि का प्रावधान किया गया है। बागबानी विभाग के निदेशक डॉ. जे. पी. शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी बैठक में उपस्थित थे।

18 से 44 वर्ष आयु वर्ग का होगा निःशुल्क टीकाकरण

प्रदेश में अभी तक 20 प्रतिशत जनसंख्या का कोविड-19 के लिए टीकाकरण किया जा चुका है और इस दिशा में हिमाचल देश के अग्रणी राज्यों में शामिल है। स्वास्थ्य विभाग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में बताया कि प्रदेश सरकार ने अब 18 से 44 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों का भी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में निःशुल्क टीकाकरण करने का फैसला किया है। इस आयु वर्ग के लोगों का पंजीकरण कार्य कोविन पोर्टल पर आरम्भ कर दिया गया है और अब आरोग्य सेतु ऐप पर भी यह सुविधा प्राप्त की जा सकती है। पात्र व्यक्ति इस पोर्टल पर टीकाकरण के लिए अपना पंजीकरण करवा सकते हैं।

टीकाकरण में हिमाचल देश के अग्रणी राज्यों में

प्रवक्ता ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में 18 से 45 वर्ष की आयु के लगभग 31 लाख लोग टीकाकरण के लिए पात्र हैं। इन लोगों को सरकारी कोविड टीकाकरण केन्द्रों पर टीका लगाने के लिए राज्य ने सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डिया से कोविड की 73 लाख खुराकें चरणबद्ध तरीके से खरीदने के लिए मांग पहले ही भेज दी है। दवा निर्माता कम्पनी ने सूचित किया है कि आपूर्ति तीन-चार सप्ताह में आरम्भ हो जाएगी और इसके उपरान्त राज्य के सरकारी कोविड टीकाकरण केन्द्रों पर टीकाकरण का तीसरा चरण आरम्भ कर दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि टीकाकरण के तीसरे चरण के लिए निजी स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं और औद्योगिक संस्थानों के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। वे इस सन्दर्भ में सम्बन्धित जिला के मुख्य चिकित्सा अधिकारियों से सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रवक्ता ने कहा कि कोविड के बढ़ते मामलों को देखते हुए लोगों से तीसरे चरण में टीकाकरण के लिए अधिक से अधिक संख्या में आगे आने की मांग की गई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकारी कोविड टीकाकरण केन्द्रों पर टीकाकरण का कार्य वैक्सीन की आपूर्ति होने के उपरान्त ही आरम्भ किया जाएगा। इस सन्दर्भ में समय-समय पर लोगों को जानकारी प्रदान की जाएगी। पात्र व्यक्ति अगर चाहें तो निजी टीकाकरण केन्द्रों पर भी निर्धारित शुल्क जमा करवाकर टीका लगा सकते हैं।

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः हरबंस सिंह ब्रसकोन, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः रीमा कश्यप, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381-PBX.A29,वरिष्ठ सम्पादकः वेद प्रकाश, सम्पादकः नर्बदा कंवर
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. OR girirajweekly 1978 @yahoo.co. in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)